संयम ◆संस्कार ◆संतुलन

R.N.I. No.-UPHIN/2004/22466

वर्ष-22 अंक- 151
पृष्ठ 8
गुरूवार
19 फरवरी 2026
प्रातः संस्करण
हिन्दी दैनिक
प्रयागराज
मूल्य-1.00

शहर समता

प्रयागराज से प्रकाशित Email : shaharsamta@gmail.com Website : https://Shaharsamta.com

सम्पादक-उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

विविध- सुबह उठने के बाद थकान और...

विचार- अमरीका का ट्रम्प कार्ड और...

खेल- 67 साल में पहली बार फाइनल...

भारतीय नौसेना देश के समुद्री हितों की रक्षा के लिए पूरी तरह सतर्क है : राष्ट्रपति मुर्मू

नयी दिल्ली (एजेंसी)। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने विशाखापत्तनम में बुधवार को अंतरराष्ट्रीय बेड़ा समीक्षा के दौरान कहा कि भारतीय नौसेना देश के समुद्री हितों की रक्षा करने के लिए पूरी तरह सतर्क रहने के साथ-साथ व्यापक समुद्री वाणिज्य गतिविधियों की स्थिरता में भी योगदान दे रही है। बंगाल की खाड़ी में भारतीय नौसेना के युद्धपोत पर सवार होकर विशाखापत्तनम तट पर अंतरराष्ट्रीय बेड़ा समीक्षा (इंटरनेशनल फ्लीट रिव्यू.... आईएफआर) की अध्यक्षता करते हुए राष्ट्रपति ने कहा कि भारतीय नौसेना समुद्र में उत्पन्न होने वाली चुनौतियों और खतरों के खिलाफ रक्षा और प्रतिरोध के एक विश्वसनीय साधन के रूप में क्षेत्र में तैनात है। मुर्मू ने कहा,

ाभारतीय नौसेना देश के समुद्री हितों की रक्षा के लिए पूरी तरह सतर्क है और व्यापक समुद्री वाणिज्यिक गतिविधियों की स्थिरता में योगदान दे रही है।ष उन्होंने यह भी कहा कि भारतीय नौसेना दुनिया भर की नौसेनाओं के साथ सद्भावना को बढ़ावा देने और विश्वास, भरोसे व दोस्ती का सेतु बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। राष्ट्रपति के अनुसार, विशाखापत्तनम का समुद्री इतिहास गौरवशाली रहा है। उन्होंने कहा कि आज का आयोजन विशाखापत्तनम के निरंतर नौसैनिक महत्व को रेखांकित करता है। भारतीय नौसेना की पूर्वी नौसेना कमान (ईएनसी) का मुख्यालय विशाखापत्तनम में स्थित है।

भारत और उसके मित्र देशों की नौसेनाओं के युद्धपोतों के प्रभावशाली बेड़े और नौसैनिकों के प्रदर्शन को देखकर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए राष्ट्रपति मुर्मू ने उन्हें बधाई दी। राष्ट्रपति ने कहा कि आईएफआर समुद्री परंपराओं के प्रति राष्ट्रों के बीच एकता, विश्वास और सम्मान को दर्शाता है। उन्होंने कहा कि विभिन्न देशों के जहाज और अलग-अलग देशों के नाविक एकजुटता की भावना का प्रदर्शन करते हैं। मुर्मू ने समुद्रों के साथ भारत के संबंधों पर कहा कि यह संबंध सदियों पुराने, गहरे और स्थायी हैं। उन्होंने महासागरों को भारत के लिए वाणिज्य, संपर्क और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का मार्ग बताया। राष्ट्रपति ने कटक में श्कार्तिक पूर्णिमाश से शुरू होने वाले सप्ताह के दौरान उत्साहपूर्वक मनाए जाने वाले श्बाली यात्राश उत्सव का उल्लेख करते हुए कहा कि यह त्योहार वर्तमान ओडिशा के प्राचीन नाविकों के प्रति सम्मान की अभिव्यक्ति है। उन्होंने रेखांकित किया कि यह उत्सव प्राचीन कलिंग काल से विभिन्न उद्देश्यों के लिए दक्षिण-पूर्व एशिया की नियमित समुद्री यात्राओं की परंपरा को परिलक्षित करता है। राष्ट्रपति ने कहा, ष्इन यात्राओं ने व्यापार और वस्तुओं, विचारों और मूल्यों के आदान-प्रदान और उनकी भावना में योगदान दिया है, जिसने पूरे क्षेत्र में एक साझा सांस्कृतिक चेतना को आकार दिया।ष मुर्मू ने कहा कि यह बेड़ा समीक्षा भारत के श्महासागरश के एकीकरण की भावना को आगे बढ़ाती है,।

पीएम से मुलाकात के बाद बोले गूगल प्रमुख पिचाई

भारत एआई के क्षेत्र में असाधारण प्रगति के लिए तैयार

नई दिल्ली,एजेंसी। गूगल के सीईओ सुंदर पिचाई ने राजधानी दिल्ली में पीएम मोदी से मुलाकात की। पिचाई भारत में आयोजित ग्लोबल एआई इम्पैक्ट समिट 2026 में हिस्सा लेने आए हैं और 20 फरवरी को समिट में मुख्य भाषण देंगे। भारत पहुंचने पर पिचाई ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट कर कहा कि एआई इम्पैक्ट समिट के लिए भारत लौटकर खुशी हो रही है और यहां हमेशा की तरह गर्मजोशी से स्वागत किया गया। भारत पहुंचने पर पिचाई ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट कर कहा कि एआई इम्पैक्ट समिट के लिए भारत लौटकर खुशी हो रही है और यहां हमेशा की तरह गर्मजोशी से स्वागत किया गया। पीएम मोदी ने अपने सोशल मीडिया एक्स पर कहा कि दिल्ली में एआई इम्पैक्ट समिट के दौरान श्री सुंदर पिचाई से मिलकर बेहद खुशी

हुई। हमने एआई के क्षेत्र में भारत द्वारा किए जा रहे कार्यों और इस क्षेत्र में हमारे प्रतिभाशाली छात्रों और पेशेवरों के साथ गूगल कैसे काम कर सकता है, इस बारे में चर्चा की। पिचाई ने कहा कि भारत कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के क्षेत्र में असाधारण प्रगति के लिए तैयार है और गूगल देश के एआई परिवर्तन में साझेदारी के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि एआई हमारे जीवन का सबसे बड़ा प्लेटफॉर्म बदलाव है, जो स्वास्थ्य सेवाओं में बेहतर डायग्नोस्टिक्स से लेकर किसानों को रियल-टाइम अलर्ट देने जैसे बड़े स्तर की चुनौतियों को हल करने में सक्षम है। पिचाई ने भारत की विविधता, बहुभाषी पारिस्थितिकी और मजबूत डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर को नवाचार के लिए मजबूत आधार बताते हुए कहा कि यह वैश्विक स्तर पर एआई के लोकतांत्रिक उपयोग का एक मॉडल बन सकता है। उन्होंने जोर दिया कि एआई का विकास भरोसे, सुरक्षा और समावेशिता को प्राथमिकता देते हुए होना चाहिए।

किरेन रिजिजू बोले- राहुल गांधी देश की सुरक्षा के लिए खतरा

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय संसदीय मामलों के मंत्री किरेन रिजिजू ने बुधवार को कहा कि राहुल गांधी भारत की सुरक्षा के लिए सबसे खतरनाक इंसान बन गए हैं। वे भारत विरोधी ताकतों से जुड़े हैं। वे नक्सलियों, उग्रवादियों और जॉर्ज सोरोस जैसे लोगों से मिलते हैं। रिजिजू ने ये बातें न्यूज एजेंसी को दिए इंटरव्यू में कहीं। रिजिजू ने आगे कहा कि संसद में राहुल का बर्ताव बचकाना और गैर-जिम्मेदाराना है। एक लीडर ऑफ अपोजिशन पूरे विपक्ष को रिप्रेजेंट करता है। संसद के बाहर जाकर लोगों को देशद्रोही कहना, ड्रामा वाले सिट-इन करना और एक अनपब्लिश्ड किताब लहराना। यह सब बच्चों जैसा बर्ताव है। हमने भारत के इतिहास में ऐसा लीडर ऑफ अपोजिशन कभी नहीं देखा। उन्होंने कहा कि कांग्रेस का काम सिर्फ संसद में हंगामा करना

है। कांग्रेस कहती है कि हम उन्हें बोलने नहीं देते। लेकिन जैसे ही वे (राहुल) अंदर आते हैं। हंगामा, बैनर और नारेबाजी शुरू हो जाती है। कांग्रेस के सीनियर लीडर मणिशंकर अय्यर के इस बयान पर कि 'मैं गांधीवादी, नेहरूवादी, राजीववादी हूं, लेकिन राहुलवादी नहीं हूं।' इस पर रिजिजू ने कहा कांग्रेस के पास कभी मजबूत लीडर हुआ करते थे, जिनकी बातों और काम में मैच्योरिटी थी। धीरे-धीरे कांग्रेस राहुल गांधी जैसी हो गई है और उनके आस-पास रहने वाले लोग भी उनके जैसे हो गए हैं। हम सोच भी नहीं सकते थे कि कांग्रेस ऐसी हो जाएगी। राहुल गांधी के समर्थक भी अब उन्हें गंभीरता से क्यों नहीं लेते, क्योंकि राहुल बिना सच के बोलते हैं। अगर प्रधानमंत्री किसी से मिले हैं या अगर कोई डॉक्यूमेंट मौजूद हैं तो उन्हें पेश करें। वे बिना किसी आधार के प्रधानमंत्री का नाम जबर्दस्ती ले रहे हैं। रिजिजू ने पार्लियामेंट में गांधी के बर्ताव पर भी सवाल उठाया और कहा, राहुल गांधी लोकसभा में बिना मतलब के बोल रहे हैं।

असम में एसआर पर बोले मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार

योग्य मतदाताओं को शामिल करना ही उद्देश्य

गुवाहाटी,एजेंसी। असम में चल रही विशेष पुनरीक्षण प्रक्रिया को लेकर मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार ने कहा है कि असम में कराए गए विशेष पुनरीक्षण का उद्देश्य केवल यह सुनिश्चित करना था कि सभी पात्र मतदाता सूची में शामिल हों और अपात्र नामों को हटाया जाए। तीन दिवसीय दौरे के बाद आयोजित प्रेस वार्ता में उन्होंने बताया कि चुनाव से पहले मतदाता सूची का पुनरीक्षण कानूनन अनिवार्य है। असम में यह प्रक्रिया इसलिए कराई गई क्योंकि यह देश का एकमात्र राज्य है जहां राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर की प्रक्रिया लगभग पूरी हो चुकी है। चुनाव तिथियों के निर्धारण पर पूछे गए सवाल के जवाब में ज्ञानेश कुमार ने कहा कि बीहू असम का अत्यंत महत्वपूर्ण पर्व है। इसलिए समीक्षा बैठकों के दौरान विभिन्न पक्षों से प्राप्त सुझावों और प्रस्तावों पर गंभीरता से विचार किया जाएगा। उन्होंने संकेत दिया कि चुनाव कार्यक्रम तय करते समय राज्य की सांस्कृतिक और सामाजिक परिस्थितियों को ध्यान में रखा जाएगा। ज्ञानेश कुमार के मुताबिक, आयोग की प्राथमिकता स्वतंत्र, निष्पक्ष और सुचारु चुनाव कराना है, लेकिन इसके साथ ही स्थानीय परंपराओं और जनभावनाओं का सम्मान करना भी उतना ही जरूरी है। उन्होंने भरोसा दिलाया कि सभी पक्षों से प्राप्त सुझावों का मूल्यांकन कर संतुलित और व्यावहारिक चुनाव कार्यक्रम घोषित किया जाएगा।

मुख्य चुनाव आयुक्त ने स्पष्ट किया कि चुनावी नियमों के अनुसार मतदान से पहले मतदाता सूची का अद्यतन जरूरी है। इसी के तहत 12 राज्यों में विशेष गहन पुनरीक्षण कराया गया, जबकि असम में विशेष पुनरीक्षण आयोजित किया गया। उन्होंने बताया कि यह पूरी प्रक्रिया सफल रही है। राज्य के सभी जिलों से कुल लगभग 500 लोगों ने ही अपने नाम जोड़ने या किसी अन्य नाम को हटाने के लिए अपील दायर की है, जो इस बात का संकेत है कि सूची काफी हद तक सटीक है। मुख्य चुनाव आयुक्त के साथ चुनाव आयुक्त डॉ. सुखबीर सिंह संधू और डॉ. विवेक जोशी भी तीन दिवसीय दौरे पर असम आए थे। इस दौरान आगामी विधानसभा चुनावों की तैयारियों की विस्तृत समीक्षा की गई। आयोग ने प्रशासनिक अधिकारियों और अन्य संबंधित पक्षों के साथ बैठक कर मतदान केंद्रों, सुरक्षा व्यवस्था, मतदाता सूची और अन्य व्यवस्थाओं का जायजा लिया। मुख्य चुनाव आयुक्त ने भरोसा जताया कि

चुनाव प्रक्रिया पूरी तरह निष्पक्ष, पारदर्शी और शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराई जाएगी। चुनाव आयोग ने प्रत्येक मतदान केंद्र पर अधिकतम 1,200 मतदाताओं की सीमा तय की है। इससे मतदान प्रक्रिया अधिक सुगम और व्यवस्थित होने की उम्मीद है। आयोग का मानना है कि इससे लंबी कतारों और भीड़भाड़ की समस्या कम होगी और मतदान प्रतिशत भी बढ़ सकता है। पहली बार असम में मतदाताओं को मतदान केंद्र के प्रवेश द्वार पर अपने मोबाइल फोन रखने की अनुमति दी जाएगी। अब तक कई जगहों पर मोबाइल फोन ले जाने पर पूर्ण प्रतिबंध रहता था, जिससे मतदाताओं को असुविधा होती थी। नई व्यवस्था के तहत प्रवेश द्वार पर सुरक्षित जमा करने की सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। मुख्य चुनाव आयुक्त ने कहा कि चुनाव आयोग का उद्देश्य केवल स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव कराना ही नहीं, बल्कि मतदाताओं को अधिकतम सुविधा देना भी है।

गीता से मिलती है वैश्विक प्रेरणा-अमित शाह

कोलकाता,एजेंसी। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने बुधवार को पश्चिम बंगाल के मायापुर स्थित इस्कॉन मुख्यालय का दौरा किया। गृह मंत्री शाह सुबह कोलकाता के नेताजी सुभाष चंद्र बोस अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर पहुंचे। यहां उनका स्वागत प्रदेश भाजपा अध्यक्ष समिक भट्टाचार्य और विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष सुवेंदु अधिकारी ने किया। एयरपोर्ट से शाह हेलीकॉप्टर के जरिए नदिया जिले के कृष्णानगर पहुंचे, जहां से वे मायापुर स्थित इस्कॉन मुख्यालय के लिए रवाना हुए। यह दौरा पूरी तरह पूर्व निर्धारित कार्यक्रम के तहत आयोजित किया गया था। पश्चिम बंगाल के नदिया जिले स्थित इस्कॉन मुख्यालय के दौरे पर पहुंचे केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि आज दुनिया भर में फैल रहा इस्कॉन आंदोलन भक्तिवेदांत प्रभुपाद और उनके प्रेरणास्रोत भक्तिसिद्धांत प्रभुपाद के जीवन कर्म का परिणाम है। श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए शाह ने स्पष्ट किया कि वे यहां गृह मंत्री के रूप में नहीं, बल्कि चौतन्य महाप्रभु के एक भक्त के रूप में पहुंचे हैं।

उन्होंने कहा आपने मुझे भारत के गृह मंत्री के रूप में संबोधित किया, लेकिन मैं यहां उस रूप में नहीं आया हूं। मैं चौतन्य महाप्रभु का एक श्रद्धालु बनकर इस पवित्र धाम में आया हूं।

प्रयागराज समेत 20 जिलों के परीक्षा केंद्रों पर जैमर, 1000 संदिग्धों के मोबाइल नंबर सर्विलांस पर

प्रयागराज। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद ने हाईस्कूल एवं इंटरमीडिएट बोर्ड परीक्षा को नकलविहीन और शांतिपूर्ण ढंग से कराने के लिए सख्त निगरानी व्यवस्था लागू कर दी है। प्रदेश में 222 अतिसंवेदनशील और 683 संवेदनशील परीक्षा केंद्र चिह्नित किए गए हैं। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद ने हाईस्कूल एवं इंटरमीडिएट बोर्ड परीक्षा को नकलविहीन और शांतिपूर्ण ढंग से कराने के लिए सख्त निगरानी व्यवस्था लागू कर दी है। प्रदेश में 222 अतिसंवेदनशील और 683 संवेदनशील परीक्षा केंद्र चिह्नित किए गए हैं। करीब एक हजार संदिग्धों के मोबाइल नंबर एसटीएफ और खुफिया एजेंसियों के सर्विलांस पर हैं। प्रयागराज समेत 20 संवेदनशील परीक्षा केंद्रों पर मोबाइल जैमर भी लगाए गए हैं। इस वर्ष यूपी बोर्ड परीक्षा में हाईस्कूल के 27,61,696 और इंटरमीडिएट के 25,76,082 परीक्षार्थी शामिल होंगे। प्रदेश के 75 जिलों में कुल 8033 विद्यालयों को परीक्षा केंद्र बनाया गया है। हाल ही में मुख्य सचिव एसपी गोयल की बैठक के बाद अपर मुख्य सचिव माध्यमिक शिक्षा पार्थ सारथी सेन शर्मा ने प्रमुख सचिव गृह को पत्र लिखकर अतिसंवेदनशील केंद्रों पर एसटीएफ और एलआईयू की तैनाती के निर्देश दिए थे।

एसटीएफ ने कार्रवाई तेज करते हुए प्रयागराज, कौशाम्बी, प्रतापगढ़, आगरा, मथुरा, अलीगढ़, हाथरस, एटा, कासगंज, हरदोई, कन्नौज, आजमगढ़, बलिया, मऊ, जौनपुर, गाजीपुर, देवरिया और गोंडा सहित 18 जिलों में करीब 1000 से अधिक स्कूल संचालकों, प्रधानाचार्यों, गाइड विक्रेताओं, शिक्षकों व अन्य संदिग्ध लोगों के मोबाइल नंबर सर्विलांस पर ले लिए हैं। नकल रोकने के लिए विशेष सतर्कता बरती जा रही है और संदिग्ध गतिविधियों पर लगातार नजर रखी जा रही है।

संवेदनशीलता के आधार पर प्रदेश के 18 जिलों की विशेष निगरानी की जा रही है। संदिग्ध लोगों के मोबाइल नंबर एसटीएफ और खुफिया एजेंसियों के रडार पर हैं। 20 स्थानों पर जैमर लगा दिए गए हैं। हालांकि, सुरक्षा कारणों से स्थानों का खुलासा नहीं किया जा सकता। – भगवती सिंह, सचिव, माध्यमिक शिक्षा परिषद

होली पर घर जाना होगा आसान, शहर से बसों के 148 अतिरिक्त फेरे

प्रयागराज। होली पर यात्रियों की भारी भीड़ को देखते हुए उत्तर प्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम ने कमर कस ली है। यात्रियों को सुगम सफर देने के लिए विभाग ने 28 फरवरी से नौ मार्च 2026 तक विशेष अभियान चलाने का निर्णय लिया है। होली पर यात्रियों की भारी भीड़ को देखते हुए उत्तर प्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम ने कमर कस ली है। यात्रियों को सुगम सफर देने के लिए विभाग ने 28 फरवरी से नौ मार्च 2026 तक विशेष अभियान चलाने का निर्णय लिया है। इस दौरान विभिन्न मार्गों पर बसों के कुल 148 अतिरिक्त फेरे लगाए जाएंगे, जबकि दिल्ली मार्ग पर सात अतिरिक्त सेवाएं उपलब्ध रहेंगी। परिवहन निगम ने सुचारु संचालन सुनिश्चित करने के लिए संविदा और आउटसोर्स चालकों/परिचालकों के लिए विशेष प्रोत्साहन योजना लागू की है। इस दौरान यदि कर्मचारी नौ दिन उपस्थित रहकर बसों का औसतन 300 किमी प्रतिदिन संचालन करते हैं तो उन्हें 3600 रुपये एकमुश्त प्रोत्साहन राशि दी जाएगी। पूरे 10 दिन ड्यूटी करने और लक्ष्य पूरा करने पर 4500 रुपये का भुगतान होगा। वहीं, मानक से अधिक किलोमीटर चलने पर 55 पैसे प्रति किमी की दर से अतिरिक्त भुगतान मिलेगा।डिपो और क्षेत्रीय कार्यशाला के कर्मचारियों को भी नौ दिन पर 1800 रुपये और 10 दिन पर 2100 रुपये का बोनस मिलेगा।

होली पर यात्रियों की संख्या में अप्रत्याशित वृद्धि होती है। इसे देखते हुए अतिरिक्त बसों का संचालन और कर्मचारियों के लिए प्रोत्साहन योजना लागू की गई है ताकि किसी भी यात्री को असुविधा न हो। – रविंद्र कुमार सिंह, क्षेत्रीय प्रबंधक, प्रयागराज परिक्षेत्र, यूपी रोडवेज

ट्रिपलआईटी में जेन-जी थीम पर बनेगा अत्याधुनिक डाकघर, हाईस्पीड वाईफाई, क्यूआर बेस्ड होगा सिस्टम

प्रयागराज। डाक सेवाओं को नई पीढ़ी के अनुरूप आधुनिक स्वरूप देने लिए भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान (ट्रिपलआईटी) परिसर में जेन–जी थीम पर आधारित अत्याधुनिक डाकघर के निर्माण की तैयारी चल रही है। डाक सेवाओं को नई पीढ़ी के अनुरूप आधुनिक स्वरूप देने लिए भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी संस्थान (ट्रिपलआईटी) परिसर में जेन–जी थीम पर आधारित अत्याधुनिक डाकघर के निर्माण की तैयारी चल रही है। यहां पत्रव्यवहार के साथ चाय–नास्ता और मनोरंजन की भी सुविधा होगी। इससे डाकघर को युवा केंद्रित पहचान मिलेगी। यह पहल आईआईटी दिल्ली में देश के पहले जेन–जी थीम आधारित डाकघर के निर्माण से प्रेरित है। प्रस्तावित डाकघर का उद्देश्य युवाओं के बीच डाक सेवाओं को अधिक आकर्षक, सुगम और तकनीक समर्थ बनाना है। इसमें आधुनिक इंटीरियर डिजाइन, हाई स्पीड वाई–फाई सुविधा, डिजिटल सेवा काउंटर, क्यूआर आधारित पार्सल बुकिंग प्रणाली तथा छात्र अनुकूल स्पीड पोस्ट जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी। इसके अतिरिक्त युवाओं को कला प्रदर्शन के लिए विशेष स्थान भी दिया जाएगा।केंद्रीय संचार मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया की परिकल्पना के अनुरूप डाकघरों को केवल पारंपरिक सेवा केंद्र न रखकर उन्हें युवा केंद्रित सामाजिक स्थानों के रूप में विकसित किया जा रहा है। इसी सोच के तहत शैक्षणिक संस्थानों में आधुनिक सुविधाओं से युक्त डाकघर स्थापित करने पर जोर दिया जा रहा है ताकि छात्र डिजिटल और भौतिक डाक सेवाओं का सहज उपयोग कर सकें।जेन–जी डाकघर के निर्माण से ट्रिपलआईटी प्रयागराज के छात्रों, शोधार्थियों और कर्मचारियों को परिसर के भीतर ही तेज, सुरक्षित और तकनीक समर्थ डाक सेवाएं उपलब्ध होंगी।

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे पुत्र का नाम मो० जाफर जैदी (MOHD-JAFAR ZAIDI) त्रुटिवश जन्म प्रमाण–पत्र में गलत अंकित हो गया है जबकि सही नाम मोहम्मद जाफर जैदी (MOHAMMAD JAFAR ZAIDI) है जो कि आधार कार्ड में सत्य एवं सही है। भविष्य में मेरे पुत्र को मोहम्मद जाफर जैदी के नाम से जाना व पहचाना जाए।

अख्तार मोहम्मद अम्मार जैदी
पता–121, नूरुल्लाह रोड, प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे पुत्र का नाम मो० ईसम जैदी (MOHD-ESAM ZAIDI) त्रुटिवश जन्म प्रमाण–पत्र में गलत अंकित हो गया है जबकि सही नाम मोहम्मद ईसम जैदी (MOHAMMAD ESAM ZAIDI) है जो कि आधार कार्ड में सत्य एवं सही है। भविष्य में मेरे पुत्र को मोहम्मद ईसम जैदी के नाम से जाना व पहचाना जाए।

अख्तार मोहम्मद अम्मार जैदी
पता–121, नूरुल्लाह रोड, प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)

चार में से कोई एक दस्तावेज है तो सुनवाई में शामिल होने की जरूरत नहीं

प्रयागराज। विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) में नो मैपिंग श्रेणी में चिह्नित किए गए दो लाख 87 हजार 612 मतदाताओं को निर्वाचन आयोग ने बड़ी राहत दी है। इन वोटरों के पास अगर चार प्रकार के दस्तावेजों में से कोई एक है तो उन्हें सुनवाई में शामिल होने की जरूरत नहीं है।

विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) में नो मैपिंग श्रेणी में चिह्नित किए गए दो लाख 87 हजार 612 मतदाताओं को निर्वाचन आयोग ने बड़ी राहत दी है। इन वोटरों के पास अगर चार प्रकार के दस्तावेजों में से कोई एक है तो उन्हें सुनवाई में शामिल होने की जरूरत नहीं है।

उप जिला निर्वाचन अधिकारी पूजा मिश्रा के अनुसार नो मैपिंग श्रेणी में चिह्नित वोटर अगर अपने बीएलओ को मान्यता प्राप्त बोर्ड/विश्वविद्यालय द्वारा जारी मैट्रिकुलेशन/शैक्षिक प्रमाणपत्र, जन्म प्रमाणपत्र, जाति प्रमाणपत्र या पासपोर्ट में से कोई एक उपलब्ध करा देते हैं तो उन्हें सुनवाई में निर्वाचन रजिस्ट्रीकरण अधिकारी या सहायक निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी के समक्ष उपस्थित होने की जरूरत नहीं है।

इसके साथ ही सुनवाई एवं निस्तारण की प्रक्रिया में तेजी लाने और मतदाताओं की सुविधा के लिए 143 नए सहायक निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारियों की नियुक्ति कर दी गई है। इससे पहले 201 सहायक निर्वाचन रजिस्ट्रीकरण अधिकारी नोटिस जारी करने व

निस्तारण की प्रक्रिया में लगे थे। अधिकारियों की संख्या बढ़कर अब 344 हो गई है और इससे सुनवाई की प्रक्रिया में तेजी आई है।

नो मैपिंग की श्रेणी में उन मतदाताओं को चिह्नित किया गया है जिनके स्वयं के नाम और माता–पिता व दादा–दादी के नाम 2003 की वोटर लिस्ट में नहीं हैं। ऐसे मतदाताओं को अपनी पहचान साबित करने के लिए निर्वाचन आयोग की ओर से निर्धारित 11 वैकल्पिक दस्तावेजों में से कोई एक प्रस्तुत करते हुए व्यक्तिगत रूप से सुनवाई में उपस्थित होना था।

आयोग ने मतदाताओं की सहूलियत के लिए इनमें से चार प्रकार के दस्तावेजों में से कोई एक प्रस्तुत करने पर सुनवाई में उपस्थित होने से छूट दे दी है। हालांकि, संबंधित विभागों से दस्तावेजों का सत्यापन कराया जा रहा है ताकि यह स्पष्ट हो सके कि दस्तावेज फर्जी तो नहीं हैं। सबसे अधिक वोटरों ने हाईस्कूल की मार्कशीट प्रस्तुत की है, जिनका सत्यापन यूपी बोर्ड से कराया जा रहा है।

तार्किक विसंगति पर भी देना है प्रमाणपत्र

तार्किक विसंगति में तकरीबन 7.74 लाख मतदाता चिह्नित किए गए हैं। ऐसे वोटर जिनके नाम ड्राफ्ट वोटर लिस्ट में शामिल हैं, लेकिन 2003 व 2025 की वोटर लिस्ट में उनके नाम की वर्तनी में अंतर है, ऐसे वोटर जिनकी छह मतदाताओं से मैपिंग हुई है, ऐसे वोटर जिनकी आयु व माता–पिता की आयु के बीच 15 वर्ष से कम अंतर है या ऐसे वोटर जिनकी आयु और उनके दादा–दादी की आयु में 40 वर्ष से कम अंतर है और अन्य विसंगतियों के कारण उन्हें तार्किक विसंगति श्रेणी रखा गया है। ऐसे वोटरों को नोटिस प्राप्त होने पर शैक्षिक दस्तावेज, जन्म प्रमाणपत्र, जाति प्रमाणपत्र और पासपोर्ट में से कोई एक बीएलओ को उपलब्ध कराना है।

वोटर लिस्ट से जुड़े 9444 युवा मतदाता

एसआईआर के तहत तैयार की जा रही वोटर लिस्ट से अब तक 9444 युवा मतदाता जुड़ चुके हैं। इनकी आयु 18 से 19 वर्ष के बीच है और यह पहली बार मतदान करेंगे। ड्राफ्ट वोटर लिस्ट जारी होने से पहले 4053 युवाओं ने मतदाता बनने के लिए फॉर्म भरे थे, जिनके नाम ड्राफ्ट वोटर लिस्ट में शामिल हैं। छह जनवरी को ड्राफ्ट वोटर लिस्ट जारी होने से लेकर अब तक 5391 युवाओं ने मतदाता बनने के लिए फॉर्म भरे हैं, जिनके नाम वोटर लिस्ट में शामिल किए जा रहे हैं। इस तरह अब तक कुल 9444 युवा वोटर मतदाता सूची से जुड़ चुके हैं।

व्यक्तिगत सुविधाओं के बजाय छात्र हित सर्वोपरि, तबादले को चुनौती देने वाली याचिकाएं खारिज

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि शिक्षा का अधिकार अधिनियम (आरटीई)–2009 के तहत बच्चों को गुणवत्तापूर्ण अनिवार्य शिक्षा मिल सके, इसके लिए छात्र–शिक्षक अनुपात बनाए रखना राज्य की वैधानिक जिम्मेदारी है।

इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि शिक्षा का अधिकार अधिनियम (आरटीई)–2009 के तहत बच्चों को गुणवत्तापूर्ण अनिवार्य शिक्षा मिल सके, इसके लिए छात्र–शिक्षक अनुपात बनाए रखना राज्य की वैधानिक जिम्मेदारी है। ऐसे में शिक्षक की व्यक्तिगत सुविधाओं के बजाय छात्र हित सर्वोपरि है। इसी टिप्पणी के साथ न्यायमूर्ति मंजू रानी चौहान की एकल पीठ ने प्रदेश सरकार की ओर से बेसिक शिक्षा परिषद के स्कूलों में शिक्षकों के स्थानांतरण के लिए जारी 14 नवंबर 2025 के शासनादेश को बरकरार रखते हुए पांच याचिकाएं निस्तारित कर दीं।

चित्रकूट से अरुण प्रताप सिंह समेत 38, मिर्जापुर से संगीता सिंह समेत 43, मैनपुरी से स्वदेश कुमार समेत 58, गोरखपुर से अभिषेक कुमार त्रिपाठी समेत 12, जालौन से

अमनराज समेत छह शिक्षकों ने शासनादेश को हाईकोर्ट में चुनौती दी थी। याचियों के अधिवक्ताओं ने दलील दी कि शिक्षकों के स्थानांतरण को लेकर जारी शासनादेश मनमाना है। इसमें स्थानांतरण की स्पष्ट प्रक्रिया नहीं बताई गई है।

जुलाई के बजाय बीच सत्र नवंबर में शिक्षकों के समायोजन से पढ़ाई बाधित होती है। साथ ही अलग–अलग जिलों में अलग मानदंड अपनाए गए हैं। अपर मुख्य स्थायी अधिवक्ता ने दलील दी कि जिन विद्यालयों में शिक्षक कम या नहीं हैं, वहां बच्चों की पढ़ाई प्रभावित हो रही है। ऐसे में सेवा शर्तों के तहत समायोजन जरूरी है।

कोर्ट ने दोनों पक्षों को सुनने के बाद कहा कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए प्रत्येक स्कूल में पर्याप्त संख्या में शिक्षकों की उपलब्धता अनिवार्य है। ऐसे में शिक्षकों का समायोजन छात्रों के हित में आवश्यक कदम है। कोर्ट ने यह भी माना कि नीति निर्माण और उसका क्रियान्वयन कार्यपालिका का विशेष अधिकार क्षेत्र है। जब तक कोई नीति मनमानी, भेदभावपूर्ण या कानून के विपरीत न हो, तब तक न्यायालय उसमें हस्तक्षेप नहीं करेगा।

शिक्षकों की शिकायतों का भी कोर्ट ने रखा ख्याल

कोर्ट ने कहा कि यदि स्थानांतरण प्रक्रिया में पारदर्शिता या मानकों को लेकर आपत्तियां हैं तो प्रभावित शिक्षक एक सप्ताह में जिला समिति के समक्ष आपत्ति दर्ज करा सकते हैं। डीएम की अध्यक्षता में गठित समितियों को निर्देश दिया गया है कि वे शिक्षकों की आपत्तियों की सुनवाई कर एक महीने में तर्कसंगत निर्णय लें। साथ ही अधिकारियों को यू डायस प्लस पोर्टल पर शिक्षकों व छात्रों का सही डाटा अपडेट करने का निर्देश दिया है।

निजी घर में नमाज पढ़ने से रोकने के मामले में डीएम–एसएसपी को अवमानना नोटिस

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने निजी परिसर में नमाज अदा करने से रोकने के मामले में बरेली के डीएम रविंद्र कुमार और एसएसपी अनुराग आर्य को अवमानना नोटिस जारी किया है। यह आदेश न्यायमूर्ति अतुल श्रीधरन और न्यायमूर्ति सिद्धार्थ नंदन की खंडपीठ ने दिया है। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने निजी परिसर में नमाज अदा करने से रोकने के मामले में बरेली के डीएम रविंद्र कुमार और एसएसपी अनुराग आर्य को अवमानना नोटिस जारी किया है। यह आदेश न्यायमूर्ति अतुल श्रीधरन और न्यायमूर्ति सिद्धार्थ नंदन की खंडपीठ ने दिया है। बरेली के तारिक खान ने याचिका दायर की है। उनका आरोप है कि वह रेशमा खान के निजी घर (परिसर) में नमाज अदा करने के लिए एकत्र हुए थे, लेकिन पुलिस ने उन्हें रोक दिया था। साथ ही बिना अनुमति इकट्ठा होने का हवाला देकर हिरासत में ले लिया था। 28 जनवरी और दो फरवरी को डीएम–एसएसपी को प्रत्यावेदन देकर रमजान के दौरान उसी परिसर में नमाज की अनुमति मांगी थी पर कोई निर्णय नहीं लिया। इसके बाद पुलिस ने दखल दिया, जिससे उनके अधिकारों का हनन हुआ। कोर्ट ने अपने 27 जनवरी के आदेश का हवाला देते हुए कहा कि मरानाथा फुल गॉस्पेल मिनिस्ट्रीज बनाम उत्तर प्रदेश राज्य सरकार मामले में स्पष्ट किया जा चुका है कि नागरिकों को अपनी निजी संपत्ति के भीतर धार्मिक प्रार्थना करने के लिए किसी अनुमति की आवश्यकता नहीं है। यह अधिकार भारतीय संविधान के तहत संरक्षित मौलिक अधिकार है। कोर्ट ने मामले की गंभीरता को देखते हुए संबंधित अधिकारियों को अवमानना नोटिस जारी कर जवाब तलब किया है। साथ ही अगली सुनवाई तक याचिकाकर्ता के खिलाफ किसी भी दंडात्मक कार्रवाई पर रोक लगा दी गई है। साथ ही सुनवाई के लिए अगली तिथि 11 मार्च नियत की है।

जीएसटी चोरी में कारण ही नहीं, गिरफ्तारी का लिखित आधार बताना भी जरूरी, व्यापारी को रिहा करने का आदेश

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि जीएसटी चोरी मामले में गिरफ्तारी का कारण बताना ही पर्याप्त नहीं है, उसका लिखित आधार देना जरूरी है। इस प्रक्रिया का पालन नहीं किए जाने पर कोई भी गिरफ्तारी अवैध होगी। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने कहा कि जीएसटी चोरी मामले में गिरफ्तारी का कारण बताना ही पर्याप्त नहीं है, उसका लिखित आधार देना जरूरी है। इस प्रक्रिया का पालन नहीं किए जाने पर कोई भी गिरफ्तारी अवैध होगी। इस टिप्पणी के साथ न्यायमूर्ति सिद्धार्थ और न्यायमूर्ति जय कृष्ण उपाध्याय की खंडपीठ ने मेरठ के व्यापारी जय कुमार अग्रवाल की गिरफ्तारी को तत्काल रिहा करने का आदेश दिया है। मामले के मुताबिक 29 दिसंबर को महानिदेशक जीएसटी की विजलेंस गाजियाबाद की टीम ने याची के घर की तलाशी ली थी। इसके बाद 16 जनवरी को जीएसटी चोरी के आरोप में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। इस दौरान मेमो में गिरफ्तारी का आधार नहीं बताया गया था। लिहाजा, गिरफ्तारी को अवैध बताते हुए रिहाई की मांग के साथ उन्होंने हाईकोर्ट का दरवाजा खटखटाया। याची के अधिवक्ता ने दलील दी कि गिरफ्तारी के समय न तो आधार लिखित में दिए गए, जबकि विभाग की ओर से जारी 13 जनवरी 2025 के सर्कुलर में स्पष्ट रूप से उल्लेख है कि किसी को गिरफ्तार करते वक्त लिखित रूप से आधार बताना जरूरी। कोर्ट ने पाया कि सीजीएसटी अधिनियम की धारा–69 में जीएसटी चोरी के मामले में भी गिरफ्तारी की प्रक्रिया दी गई है। इसके मुताबिक कमिश्नर के पास गिरफ्तारी के लिए विश्वास के कारण होने चाहिए। कारण बताया जाना इसलिए जरूरी नहीं है। क्योंकि, यह इस गोपनीय दस्तावेज है। लेकिन, गिरफ्तारी के आधार आरोपी को लिखित रूप में दिया जाना न सिर्फ जरूरी है, बल्कि यह जानना आरोपी का सांविधानिक अधिकार भी है। कोर्ट ने सुप्रीम कोर्ट के सत्येंद्र कुमार अंतिल के मामले का भी जिक्र किया। कहा कि सात साल से कम की सजा वाले मामलों में गिरफ्तारी केवल अपवाद स्वरूप ही की जा सकती है। लिहाजा, कोर्ट ने रिमांड आदेश को रद्द करते हुए याची को तत्काल रिहा करने का आदेश दिया है।

दो किशोर डूबे, एक की लाश मिली

प्रयागराज। झूंसी थाना क्षेत्र के माघ मेला क्षेत्र में दारागंज घाट की ओर मंगलवार की दोपहर गंगा में नहाते समय दो किशोर डूब गए। खोजबीन के बाद एक का शव मिला। जबकि दूसरे किशोर की तलाश जारी है। झूंसी थाना क्षेत्र के माघ मेला क्षेत्र में दारागंज घाट की ओर मंगलवार की दोपहर गंगा में नहाते समय दो किशोर डूब गए। खोजबीन के बाद एक का शव मिला। जबकि दूसरे किशोर की तलाश जारी है। पुलिस ने बताया कि दूसरे किशोर की तलाश के लिए बुधवार को गोताखोरों को गंगा में उतारा जाएगा। फूलपुर के पहसी गांव निवासी आदित्य पटेल (14) पुत्र अशोक पटेल झूंसी के कटका गांव में अपने मामा रामराज पटेल के घर पर रहकर पढ़ाई करता था। वह नई झूंसी स्थित लाला मनमोहनदास इंटर कॉलेज में कक्षा आठ का छात्र था। मंगलवार की दोपहर में आदित्य अपने दोस्त कार्तिक तिवारी (14) पुत्र स्व. अजय तिवारी निवासी फतेहगंज जौनपुर, वर्तमान पता झूंसी कटका, शिवम पुत्र भगवान निवासी मल्लाही टोला नई झूंसी और सत्यम पुत्र रामू निवासी कटका के साथ गंगा में नहाने दारागंज घाट की ओर गया था। नहाते वक्त आदित्य और कार्तिक गहरे पानी में डूबने लगे। जब तक उसके साथी कुछ समझ पाते दोनों गहरे पानी में समा गए। इसके बाद बदहवास शिवम और सत्यम भागते हुए घर लौटे और परिजनों को पूरी बात बताई। घटना की जानकारी झूंसी पुलिस को दी गई तो वह मौके पर पहुंची। बाद में गोताखोरों को मौके पर बुलाया गया। कड़ी मशक्कत के बाद आदित्य के शव को बाहर निकाला गया। जबकि कार्तिक का पता नहीं चल सका था। उधर, आदित्य का शव देखते ही परिजन बिलखने लगे। हालांकि परिजन बगैर पोस्टमार्टम कराए उसके शव को लेकर घर चले गए।

शराब और जुए के पैसे के लिए युवक की हुई थी हत्या, चारों आरोपी गिरफ्तार

प्रयागराज। बजहां गांव की दौलतपुर बस्ती में रविवार की रात युवक कुलदीप बिंद की हत्या उसके दोस्त मुन्ना व परिजनों ने शराब और जुए के पैसे को लेकर हुए विवाद में हत्या की थी।

बजहां गांव की दौलतपुर बस्ती में रविवार की रात युवक कुलदीप बिंद की हत्या उसके दोस्त मुन्ना व परिजनों ने शराब और जुए के पैसे को लेकर हुए विवाद में हत्या की थी। मुख्य हत्यारोपी मुन्ना उर्फ मुनमुन ने अपने दो अन्य भाई और मां के साथ मिलकर घर के भीतर युवक कुलदीप को लकड़ी के चौले से हत्या कर दी थी। शव को घर के सामने सड़क पर फेंक दिया था। पुलिस ने मुख्य आरोपी मुन्ना, उसके दोनों भाई और मां को गिरफ्तार कर मंगलवार को घटना का खुलासा किया।

दौलतपुर बस्ती निवासी राममूरत बिंद के छह बेटों और चार बहनों में कुलदीप (24) बीच का था। परिजनों के मुताबिक, रविवार की शाम कुलदीप अपने दोस्त मुन्ना उर्फ मुनमुन के साथ गया था। सोमवार की भोर पांच बजे उसका शव मुन्ना के घर के सामने सड़क के किनारे खून सना मिला। पिता की तहरीर पर सगे भाई मुन्ना, पप्पू, देसी बिंद और मां बबनी देवी के खिलाफ हत्या समेत अन्य धाराओं में प्राथमिकी दर्ज की गई। देर रात को झूंसी पुलिस की टीम ने छापेमारी कर मुन्ना, भाई पप्पू, देशी बिंद और मां बबनी देवी को गिरफ्तार कर लिया। एसओ झूंसी महेश मिश्र ने बताया कि कुलदीप और मुन्ना गहरे दोस्त थे। रविवार की रात दोनों में शराब और जुए के तकरीबन 2500 रुपये को लेकर विवाद हुआ था। इस दौरान कुलदीप ने मुन्ना को दांत काट लिया। इससे झल्लाए मुन्ना ने अपने दोनों भाइयों और मां के साथ मिलकर युवक की हत्या कर दी। मंगलवार दोपहर बाद पकड़े गए चारों आरोपियों को गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया गया। जहां से उन्हें न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेज दिया गया। पूछताछ के दौरान मुन्ना ने पुलिस को बताया कि दोनों दोस्त एक–एक दिन अपने पैसे से शराब खरीदकर एक–दूसरे को पिलाते थे। रविवार को शराब लाने की बारी मुन्ना की थी लेकिन उसके कहने पर कुलदीप अपने पैसे से शराब ले आया था।

परीक्षा केंद्र देखकर लौट रही 12वीं की छात्रा को ट्रक ने कुचला, मौत

प्रयागराज। फुफेरे भाई का परीक्षा केंद्र देखकर बाइक से घर लौट रही 12वीं की छात्रा को धमौर मोड़ के पास ट्रक ने कुचल दिया। मौके पर ही छात्रा की मौत हो गई। जबकि बाइक चला रहे फुफेरे भाई की हालत गंभीर है। उसका इलाज चल रहा है। जानकारी पर पहुंची पुलिस ने छात्रा के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। वहीं, आरोपी चालक ट्रक लेकर फरार हो गया। सरायगनी निवासी शैलेंद्र कुमार मौर्य की बेटी वैष्णवी मौर्य उर्फ अनुपम (17) बहरिया के आरएस आनंद हूबराजी संवारी संस्कार इंटर कॉलेज मैलहा में कक्षा 12 की छात्रा थी। वैष्णवी की बोर्ड परीक्षा 18 फरवरी से होनी थी। छात्रा के साथ ही देवरा दौलतपुर निवासी फुफेरा भाई प्रदीप कुमार मौर्य भी इंटर का छात्र है और उसका सेंटर कौशल्या देवी रामारानी मौर्य इंटर कॉलेज धमौर में गया है। मंगलवार की दोपहर में वैष्णवी अपने फुफेरे भाई प्रदीप कुमार मौर्य के साथ परीक्षा केंद्र देखने गई थी। बताया जाता है कि घर लौटते समय सरायगनी गांव के सामने धमौर मोड़ पर तेज रफ्तार से आ रही ट्रक ने बाइक में टक्कर मार दी। अनियंत्रित हुई बाइक से वैष्णवी सड़क पर गिर गई और ट्रक उसको कुचलते हुए निकल गया। वहीं, प्रदीप को भी गंभीर चोटें आईं। घटना स्थल पर जब तक लोग पहुंचते आरोपी चालक ट्रक लेकर फरार हो गया। बहरिया पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा। प्रदीप को सीएचसी मैलहा में ले जाया गया। जहां से उन्हें शहर रेफर कर दिया गया। शैलेंद्र कुमार मौर्य की तहरीर पर ट्रक चालक के खिलाफ पुलिस ने एफआईआर दर्ज की है।

एक माह से गायब युवक का जंगल में मिला शव

प्रयागराज। क्षेत्र के छापर हरदौन गांव में महीने भर से गायब युवक का शव मंगलवार शाम हरदौन गांव में जंगल के किनारे झाड़ी में पत्थरों से ढका हुआ मिला। मामले में शव की शिनाख्त के बाद मृतक के परिजन स्थानीय पुलिस पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए शव को पुलिस को देने से इन्कार कर रहे थे। परिजनों का आरोप है कि गुमशुदगी दर्ज कराने के बाद पुलिस ने सक्रियता दिखाई होती तो युवक की हत्या न होती। छापर हरदौन गांव निवासी जितेंद्र कुमार कोल (22) पुत्र लोलर आदिवासी बीते तीन जनवरी से लापता था। परिजनों ने दो सप्ताह पहले उसकी गुमशुदगी दर्ज कराई थी। मंगलवार को शाम चार बजे लौट रहे चरवाहों को जंगल से बदबू आई तो वह पहुंच गए। देखा कि झाड़ियों में पत्थर से दबाकर शव रखा गया था। सूचना पर स्थानीय पुलिस और मृतक के परिजन भी मौके पर पहुंचे। जैकेट और एक पैर से शव की शिनाख्त हुई। परिजनों ने स्थानीय पुलिस पर लापरवाही का आरोप लगाया। वहीं, पुलिस का कहना है कि घटना स्थल के पास से एक मफलर मिला है। जिसे जांच के लिए भेजा जाएगा। हर पहलू को बारीकी से जांचा जाएगा। जल्दी ही आरोपी पुलिस की गिरफ्त में होंगे। ग्रामीणों के मुताबिक मृतक चार भाइयों में तीसरे नंबर का था और अभी अविवाहित था। परिजन जिलाधिकारी के आने, हत्यारों की गिरफ्तारी और लापरवाही बरतने वाले पुलिसकर्मियों पर कार्रवाई की मांग पर अड़े रहे। मौके पर तहसीलदार कोरांव, पूर्व विधायक रामकृपाल कोल समेत अन्य लोग पहुंचे है।

आख्यान और स्मृतिः 'कल, आज और कल' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का हुआ आयोजन

प्रयागराज। इस संगोष्ठी का उद्घाटन वक्तव्य वरिष्ठ कथाकार एवं 'तद्भव' के संपादक अखिलेश जी द्वारा दिया गया।मुख्य अतिथि उच्च शिक्षा निदेशक बी.एल. शर्मा जी थे। समापन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में बद्रीनारायण (कुलपति, टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल साइंस)तथा विशिष्ट अतिथि के रूप मेंधनंजय सिंह (सदस्य सचिव, प्वैद्) उपस्थित थे।

इस दो दिवसीय संगोष्ठी में देशभर के सम्मानित कवि, कथाकार, आलोचक, इतिहासकार और समाजविज्ञानी स्मृति और आख्यान के विविध आयामों पर विचार प्रस्तुत किया। इसके उपविषयों मेंभारतीय महाकाव्य और स्मृति, लोककथाओं और मौखिक परंपरा में सामूहिक स्मृति, स्त्री, दलित एवं वंचित समुदायों के आख्यान, विभाजन, विस्थापन और आघात की स्मृतियाँ,डिजिटल युग में स्मृति और नैरेटिव, पाठ्यक्रम, इतिहास लेखन और सत्ता की राजनीति जैसे अत्यंत समकालीन और विचारोत्तेजक विषय शामिल थे।

यह संगोष्ठी केवल अकादमिक चर्चा का मंच नहीं है, बल्कि यह स्मृति और आख्यान के माध्यम से समाज, इतिहास और वर्तमान की पुनर्व्याख्या का बौद्धिक प्रयास है।इस संगोष्ठी में दूसरे दिन एक आनलाइन सत्र का आयोजन किया गया।जिसका संचालन प्रो राजेंद्र सिंह(रज्जू भय्या) विश्वविद्यालय की सहायक प्रोफेसर डॉ अलका मिश्रा ने किया।इस सत्र में पंद्रह प्रतिभागियों ने शोध पत्र का वाचन किया जिसमें सर्वश्रेष्ठ पेपर का वाचन मध्य प्रदेश की जॉ आस्था राठौर जी ने किया उनका विषय था,'हिन्दी साहित्य में आख्यान एवं स्मृतियां रू एक शोधात्मक अध्ययन था।उन्होंने कहा कि हिंदी साहित्य में आख्यान और स्मृति दो ऐसे केंद्रीय साहित्यिक उपादान हैं, जो व्यक्ति, समाज और इतिहास के जटिल संबंधों को अभिव्यक्त करते हैं। आख्यान जहाँ जीवन के अनुभवों को कथात्मक संरचना प्रदान करता है, वहीं स्मृतियां अतीत के अनुभवों को वर्तमान चेतना में पुनःसक्रिय करती हैं। आधुनिक साहित्यिक विमर्श में आख्यान और स्मृति केवल साहित्यिक विधाएँ न रहकर सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक चेतना के सशक्त माध्यम बन गए हैं। आख्यान जीवन की कथा कहता है, जबकि स्मृति उस कथा को ऐतिहासिक गहराई प्रदान करती है।इन दोनों के अंतर्संबंध से हिंदी साहित्य अधिक संवेदनशील, लोकतांत्रिक और वैचारिक रूप से समृद्ध हुआ है। भविष्य में भी आख्यान और स्मृतियां हिंदी साहित्य को नई दिशाएँ प्रदान करती रहेंगी।जोरहट,असम से जुड़ी हुयी जॉ क्लारा बाड़ा ने "शिवानी की कृतियों में प्रकृति शैली और सामाजिक चेतन्न का अध्ययन" शिवानी हिन्दी की प्रमुख लेखिका है , जिसने उन्यासों में प्रकृतिक चित्रण और सामाजिक चेतना का विशेष स्थान दिया है। यह शोध पत्र शिवानी की कृतियों में प्रकृति शैली और सामाजिक चेतना के विविध पहलुओं का व्विश्लेषण करता है। शिवानी की कृतियों में प्रकृति का चित्रण एक सशक्त साहित्यिक उपकरण के रूप में उभरता है। उन्होने प्रकृति को मानवीय संवेदनाओं से जोड़कर एक नया आयाम दिया है। इस शोध से यह स्पस्ट होता है की शिवानी की रचनाओं में प्रकृति केवल सजावट नहीं बल्कि एक गहन भावनात्मक और प्रकृतिक तत्वा है, जो उनके साहित्य को अमर बनाता है। शिवानी की रचनाएँ केवल कहानिया नहीं बल्कि समाज का आईना है। उन्होने स्त्री जीवन की पीड़ा, सामाजिक विसगतियों और मानवीय संवेदनाओं को पेश किया है कि पाठक गहराई से सोचने पर मजबूर हो जाता है। उनका साहित्य न केवल मनोरनजन करता बल्कि सामाजिक बदलाव की प्रेरणा देता है। अपने साहित्य – सृजन का मुख्य उद्देश्य यह है कि सामाज के विभिन्न क्षेत्रों में फैली 'अराजकता, भ्रष्टाचार , अनाचार , कुरीतियों एंव विसंगतियों' को आम जनता जाने और समझे । एसा साहित्य रचा जाए जो जन साधारण को भी ऊपर उठाए । साहित्य आदार्षोन्मुख एंव वास्तविक हो , जिनसे जन–समुदाय का कल्याण हो। दिल्ली विश्वविद्यालय के शिवा जी कॉलेज से डॉ बबली जी ने"पद्मावत रू लौकिक से अलौकिक प्रेम की आख्यान यात्रा" पर अपने शोध पत्र का वाचन किया।भारतीय ज्ञान परंपरा से ही आख्यान परंपरा फलीभूत हुई जो वेदों, उपनिषद

और पुराणों से होते हुए भारतीय इतिहास को एक दृष्टि प्रदान करती हैं। आख्यान परंपरा का मूल स्रोत ऋग्वेद को माना जाता है।हिंदी साहित्य में आदिकाल में रासो काव्य ऐतिहासिक और काल्पनिक आख्यान हैं। मध्यकाल में सूफी कवियों के प्रेमाख्यानक काव्य और आधुनिक काल में मैथिली शरण गुप्त , दिनकर, धर्मवीर भारती, मुक्तिबोध आदि के काव्य में आख्यानों के विभिन्न रूपो को देखा जा सकता है।

पद्मावत का केंद्रीय कथ्य प्रेम तत्व की अभिव्यक्ति है। पद्मावत एक ऐसा प्रेमाख्यानक काव्य हैं जिसके केंद्र में नीरस शास्त्र न होकर प्रेम है। वही प्रेम जो गोपियों, मीरा और कबीर आदि कवियों में है। प्रेम के विराट स्वरूप की अभिव्यक्ति जायसी के पद्मावत में देखने को मुलती है,जो आख्यान का आधार बनती है।अलीगढ के ही डॉ नागेन्द्र सिंह पटेल ने"अंधेरा कायम रहे विशेष संदर्भ तमस" पर अपने शोध पत्र का वाचन किया।उन्होंने कहा कि भारत में अंग्रेजों की शासन की पकड़ जाते हुए देख, अंग्रेज अफसरों ने अपनी पुरानी नीति बांटो और राज करो को और पुष्ट करते हुए धार्मिक अंधेरा को कायम रखने की कोशिश की स श्तमसश उपन्यास इसकी अच्छी व्याख्या करता है स 'इस उपन्यास का मुख्य संदेश यही है कि नफ़रत – सेवा, सदव्यवहार से दूर नहीं होता उसका समाधान समय ही करता है स' तत्कालीन कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने मुस्लिमों के स्नेह और विश्वास को पाने के लिए प्रभात फेरी निकाला इसके तहत वे मुस्लिम मुहल्लों में साफ –सफाई कर उनका दिल जीतने की पूरी कोशिश की स फिर भी दंगे को रोक नहीं पाये।मधुबनी बिहार से ऑनलाइन माध्यम से जुड़े डॉ दीपक त्रिपाठी जी ने"स्मृति का मिथकीय, स्वरूप रू दिनकर काव्य का सन्दर्भ" विषय पर अपने शोध पत्रों का वाचन किया।उन्होंने कहा कि स्मृतियाँ मुख्तयः दो रूपों में व्यक्त होती हैं – इतिहास और मिथक। इतिहास जाग्रत चेतना का परिणाम होता है जबकि मिथक हमारी अन्तःचेतना का परिणाम होता है। इस अन्तःचेतना को अचेतन स्तर पर सक्रिय स्मृति भी कह सकते हैं। प्रत्येक भाषा के काव्य में मिथकों का विभिन्न प्रकार से प्रयोग प्रायः देखने–पढ़ने को मिल जाता है।

हिन्दी के सुप्रसिद्ध रचनाकार और श्समय सूर्यश कहे जानेवाले कवि रामधारी सिंह श्दिनकरश के काव्य में मिथकीय चेतना का ऐसा कलात्मक और अर्थपूर्ण निदर्शन हुआ है जैसा हिन्दी–काव्य में अन्यत्र देखने को नहीं मिलता। दिनकर के बहुचर्चित काव्य–ग्रन्थ वही हैं जिनमें मिथकीय तत्त्व की प्रधानता है। इसके साथ ही आशीष यादव, जीतेन्द्र कुमार, प्रतिज्ञा सिंह,ज्योति,प्रियंका सिंह, प्रियंका त्रिपाठी,मनोज कुमार,रेनू जैन,संजीव कुमार, रामेन्द्र शर्मा और सूर्य प्रताप राघव जी आभासी माध्यम से इस सत्र के वक्ता रहे।

आनलाइन माध्यम का अध्यक्षीय वक्तव्य डॉ अलका मिश्रा ने दिया और संयोजन श्रीमती ललिता देवी ने किया। इस संगोष्ठी के संयोजक डॉ जगन्नाथ दूबे ने आभासी पटल पर संपन्न हुए सत्र की सराहना की।

पात जब हुए गुलाबी

बंधन से हैं मुक्त मगर बंधन में रहते।
प्यारी है यह रीति रंग सब मिलकर कहते।
प्रीति प्रेम मनुहार सभी फागुन की थाथी।
बन जीवन की छाँव सदा खुशियों को लाती।
हुल्लड़ में भर सादगी स्वर में भरें मिठास को।
आलिंगन को अर्थ दे जीवित करते विश्वास को।।

सच से हैं लबरेज न कहना इसे किताबी।
मौसम के अनुरूप पात जब हुए गुलाबी।
मस्ती में हो चूर हवाएँ चंचल चंचल।
दिल में भरें उमंग फ़िज़ाएँ चन्दन चन्दन।
फागुन का यह रंग है चढ़ती हुई उमंग है।
अनुशासन के संग में गरमागरम प्रसंग है।।

डॉ. प्रदीप चित्रांशी
लूकरगंज, प्रयागराज

वाद विवाद प्रतियोगिता में सुश्री प्रथम, आर्या राजपूत द्वितीय तथा अनुष्का कृष्णा तृतीय स्थान पर

प्रयागराजसअर्थशास्त्र विभाग, ईसीसी कॉलेज द्वारा बुधवार, 18 फरवरी को "तकनीक हमें अधिक एकाकी बना रही है" विषय पर वाद–विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें बीए और बीएससी के 32 विद्यार्थियों ने भाग लिया और विषय के पक्ष और विपक्ष में अपने विचार प्रस्तुत किए। प्रतिभागियों ने विषय से सम्बन्धित प्रश्न भी पूछे, जिससे कार्यक्रम में संवादात्मक वातावरण

बना रहा। प्रतियोगिता में सुश्री ने प्रथम, आर्या राजपूत ने द्वितीय तथा अनुष्का कृष्णा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया, जबकि सर्वोत्कृष्ट प्रश्नकर्ता का पुरस्कार आर्पिता तिवारी को मिला। अर्थशास्त्र विभागाध्यक्ष प्रोफेसर उमेश प्रताप सिंह ने विजेताओं को नगद पुरस्कार, पुस्तकें एवं प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया।

निर्णायक मंडल में डॉ राम प्रकाश सिंह, पूर्व विभागाध्यक्ष, गणित विभाग, ईसीसी, डॉ. हर्षमणि सिंह, वरिष्ठ असिस्टेंट प्रोफेसर, ईश्वर सरण महाविद्यालय तथा डॉ राजेश कुमार गर्ग, प्रोफेसर हिंदी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय थे। प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए प्रोफेसर आर.पी. सिंह ने कहा कि प्रभावी वाद–विवाद के लिए आत्मविश्वास, सही भाव भंगिमा, भाषा की शुद्धता और विषय की सटीकता आवश्यक है।

उन्होंने प्रतिभागियों की प्रशंसा करते हुए उनकी कमियों की ओर ध्यान दिलाया और सुधार के महत्वपूर्ण सुझाव भी दिए।प्रोफेसर गर्ग ने वास्तविक जीवन की कहानियों के माध्यम से छात्रों को विषय से जोड़ते हुए अपनी बात रखी। डॉ. हर्षमणि सिंह ने तकनीक और एकाकीपन के संबंध को परिस्थितिजन्य परिणाम बताते हुए कहा कि तकनीक निरंतर बदलती रहती है और इसका प्रभाव इस बात पर निर्भर करता है कि हम इसका उपयोग कैसे करते हैं।

कार्यक्रम के संयोजक एवं विभागाध्यक्ष प्रो उमेश प्रताप सिंह ने कार्यक्रम के आयोजन की उपादेयता पर प्रकाश डालते हुए निर्णायक मंडल सहित सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन शोध छात्रा सौम्या एवं शिविका ने एवं धन्यवाद ज्ञापन तनया कृष्ण ने किया। शोध छात्र अमिवर्श एवं नम्रता ने कार्यक्रम के आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

नाटक 'मौसम' की सफल प्रस्तुति

प्रयागराज। शहर में आयोजित नाटक 'मौसम' की प्रभावशाली प्रस्तुति संस्था द थर्ड बेल, प्रयागराज द्वारा दर्शकों के हृदय को गहराई से स्पर्श किया। मंचन का आयोजन महाप्रबंधक, केंद्रीय रेल विद्युतीकरण के प्रांगण में किया गया, जहाँ बड़ी संख्या में रेल कर्मियों, उनके परिवारजनों तथा शहर के कला प्रेमियों की गरिमामयी उपस्थिति रही। सभागार का वातावरण आरंभ से ही उत्साह और जिज्ञासा से भरा हुआ था। नाटक 'मौसम' ने स्त्री–पुरुष संबंधों के बदलते आयामों, मनोभावों और संवेदनात्मक जटिलताओं को अत्यंत सजीव और मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया।

कथा में रिश्तों के भीतर आने वाले उतार–चढ़ाव, संवादहीनता, अपेक्षाएँ, संघर्ष और पुनः समझ की प्रक्रिया को बड़े संतुलित और प्रभावशाली तरीके से मंचित किया गया। प्रस्तुति ने यह स्पष्ट संदेश दिया कि किसी भी संबंध की नींव समझदारी, संवेदनशीलता और आपसी सम्मान पर ही टिकी होती है।

रेल मंत्रालय के सहयोग से वरिष्ठ रंग निर्देशक आलोक नायर द्वारा परिकल्पित एवं निर्देशित तथा वरुण कुमार द्वारा लिखित इस नाटक ने सामाजिक जीवन के विविध पक्षों को उजागर किया। निर्देशन में दृश्य संरचना, पात्रों की भाव–भंगिमा और संवाद की गति का विशेष ध्यान रखा गया, जिससे दर्शक आरंभ से अंत तक कथा से जुड़े रहे। कलाकारों में चंकी बच्चन, शालिनी मिश्रा, आलोक नायर, ऋतिका अवस्थी, शैलेश श्रीवास्तव एवं डॉक्टर रामा मंत्रोस के अभिनय को दर्शकों ने खूब सराहा। सभी कलाकारों ने अपने–अपने पात्रों को जीवंत कर दिया। भावपूर्ण अभिव्यक्ति, संवादों की सशक्त अदायगी और मंच पर सहज उपस्थिति ने प्रस्तुति को प्रभावपूर्ण बना दिया। मंच सज्जा एवं प्रस्तुति संयोजन निमिष गुप्ता द्वारा किया गया, जबकि प्रकाश संयोजन जतिन कुमार और ध्वनि संयोजन रवींद्र वर्मा ने संभाला। प्रकाश और ध्वनि के समन्वय ने नाटक के भावों को और गहराई प्रदान की तथा प्रत्येक दृश्य को सशक्त रूप से उभारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कार्यक्रम के समापन पर आयोजकों ने सभी कलाकारों, तकनीकी सहयोगियों एवं उपस्थित दर्शकों के प्रति आभार व्यक्त किया। 'मौसम' की यह प्रस्तुति न केवल मनोरंजन का माध्यम बनी, बल्कि सामाजिक रिश्तों पर गंभीर चिंतन के लिए भी प्रेरित कर गई।

लखनऊ यूनिवर्सिटी में लगे भागवत गो बैक के नारे,स्टूडेंट्स को पुलिस टांगकर ले गई

लखनऊ, संवाददाता। लखनऊ विश्वविद्यालय में बुधवार सुबह आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत के पहुंचते ही हंगामा शुरू हो गया। एनएसयूआई, समाजवादी छात्र सभा और भीम आर्मी से जुड़े छात्र 'गो बैक मोहन भागवत' के नारे लगाने लगे। पुलिस ने जब छात्रों को रोकने की कोशिश की, तो नोकझोंक और खींचतान शुरू हो गई। हालात बिगड़ते देख पुलिस ने प्रदर्शन कर रहे छात्रों को ठूंस–ठूंसकर जीप और बसों में भरा। कई छात्र लेट गए, तो उन्हें टांगकर ले जाया गया। सभी छात्रों को इको गार्डन भेजा गया। इसके बाद मोहन भागवत का कार्यक्रम शुरू हुआ। संघ से जुड़े लोगों को विश्वविद्यालय में कार्यक्रम करने की अनुमति दी जा रही है, जबकि विपक्षी छात्र संगठनों को हॉल तक नहीं मिलते। यूजीसी विवाद पर सुप्रीम कोर्ट ने स्टे दिया है।

भयहरण नाथ धाम क्षेत्रीय विकाश संस्थान के तत्वाधान में आयोजित २६वें महाकाल महोत्सव में विराट कवि सम्मेलन सम्पन्न

सियासत हिन्दू मुस्लिम की जलाकर राख कर देना
– शाहिद सफर
न मैं हिन्दू मुसलमान हूं न मैं सिख इसाई
एक अदत इंसान समझ लो रिश्ते में बह भाई
– कवि डा0 अशोक अग्रहरि

प्रतापगढ़। प्रसिद्ध पांडव कालीन भयहरण नाथ धाम में महाशिवरात्रि के अवसर पर चार दिवसीय महाकाल महोत्सव बड़े धूमधाम से मनाया गया,महोत्सव के समापन पर आखिरी दिन धाम के महासचिव समाज शेखर के मार्गदर्शन में ख्यातिलब्ध गीतकार डा0 अशोक अग्रहरि प्रतापगढ़ी के संयोजन एवं संचालन में विराट कवि सम्मेलन आयोजित किया गया. जिसमें स्थानीय के अलावां दूर दराज केद कवि एवं कवयत्रियों ने प्रतिभाग करते हुयेद अपनी–अपनी विधाद में अमिट छाप छोड़ा, सभी कवियों एवं कवयत्रियों का अंगबस्त्र, माल्यार्पण तथा प्रशस्तिपत्र से सारस्वत सम्मान किया गया. ध्वरिष्ठ साहित्यकार जनकवि प्रकाश जी की अध्यक्षता तथा डा0 में कवि सम्मेलन का आगाज डा0 गीता पाण्डेय अपराजिता के वाणी बन्दना से हुआ, तत्पश्चात कवियों ने अपनी प्रस्तुति देना शुरू किया,

लोकभाषा के चर्चित कवि श्री अनीस देहाती जी की रचना फागुनी रंग में लिपटी दिखी रू ष इश्क जब हद से गुजर जाय तभी है होली, सिंह जब स्यार से डर जाय तभी है होलीष

युवा दिलों की धड़कन बन चुके कौशाम्बी से पधारे कवि सुजीत जायसवालद्य की पंक्तियां भी प्रेरणास्पद रहीं,जिस पर खूब दाद मिली तीर्थ का पुण्यफल सब मिलेगा यहीं, भाग्य का पुष्प सब के खिलेगा यहींष

प्रयागराज की मशहूर कवयत्री डा0 नीलिमा मिश्रा ने अपने शेर ओ शायरी के फन का जादू बिखेरा, जिस पर भी खूब तालियां बजीरू

क्या बुरा है क्या–सही कहना, दिल्लगी हो तो दिल्लगी कहना

प्रयागराज के गंगा यमुनी तहजीब के पक्षधर नामचीन शायर शाहिद सफर अपने तेवर के प्रतापगढ़ के कवि देवा ठाकुर कल्कि ने पूरे जोशो खरोश में पढ़ारू

जब – जब बल पौरुष ढेर पड़ जाता है, मां भारती का एक शेर पैदा हो जाता है

मुकामी ख्यातिलब्ध गीतकार एफस्टिनष

अन्य कवियों में हास्यकवि आलोक वैरागी, अमरनाथ बेजोड़, श्याम मनमौजी,राज कुमार जाहिल,घ्राजेश हर्षपुरी,विवेक सुमन,बरसाती अली इत्यादि ने भी काव्यपाठ किया, अधिवक्ता

कलाम से बड़ी बेबाकी से सियासी तंज कसते हुये श्रोताओं के दिल में उतरे, और जमकर तालियां बजीरू

तिरंगे को बचा लेना मुझे चाक कर देना,
सियासत हिन्दू मुस्लिम की जलाकर राख कर देना
जो मर जाऊं वतन के नाम पर तो दोस्तों सुन लो
छिड़ककर गंगाजल तन पर सुपुर्देखाक कर देनाष

ओज के उभरते हुये नये , संचालक कवि डा0 अशोक अग्रहरि ने अपनी ताजा तरीन और असरदार रचना तरन्नुम में पढ़कर माहोल को एक नया आयाम बख्शा, जिस फर तालियों की गड़गड़ाहट और वाहवाहियों से श्रोताओं ने सचबयानी पर मुहर लगाईरू

सियासत पे कैसे करूं मैं यकीन
सभी एक जैसे कौड़ी के तीन
हैं रंग में रंगे एक जैसे सभी–
खुली पोल फाइल। जब

प्रेम कुमार त्रिपाठी प्रेम की रचनाओं ने सभी को आंदोलित किया।

संस्थान के कार्यवाहक अध्यक्ष लाल जी सिंह,अध्यक्ष राज कुमार शुक्ल, संरक्षक देवी प्रसाद मिश्र, हीरा लाल, व्यवस्था समिति के वरिष्ठ सदस्य राज किशोर मिश्र, राजेश मिश्र, हेमराज अग्रहरि, चौकी प्रभारी राजीव वर्मा, कार्यालय प्रभारी नीरज मिश्रा आदि ने चाक चौबन्द व्यवस्था में सक्रिय रहे।

अभ्यर्थियों ने आयुर्वेदिक फार्मासिस्ट भर्ती को लेकर मंत्री आवास घेरा

लखनऊ, संवाददाता। वर्ष 2024 की आयुर्वेदिक फार्मासिस्ट भर्ती में हो रही देरी को लेकर बुधवार को बड़ी संख्या में अभ्यर्थियों ने लखनऊ स्थित मंत्री डॉ. दया शंकर मिश्र 'दयालु' के आवास का घेराव किया। अभ्यर्थियों ने शीघ्र सुनवाई और भर्ती प्रक्रिया के निस्तारण की मांग को लेकर नारेबाजी की। सरकार से ठोस पहल करने की अपील की। अभ्यर्थियों का कहना है कि भर्ती प्रक्रिया कोर्ट केस के कारण अटकी हुई है और अब तक 51 तारीखें लग चुकी हैं। लगातार बढ़ती तारीखों से अभ्यर्थियों में भारी नाराजगी है। उनका आरोप है कि सरकारी पक्ष की ओर से प्रभावी पैरवी न होने के कारण मामला लंबित चल रहा है, जिससे नियुक्ति प्रक्रिया आगे नहीं बढ़ पा रही है। प्रदर्शनकारियों का कहना था कि लंबे समय से तैयारी कर रहे युवाओं का भविष्य अधर में लटक गया है। कई अभ्यर्थियों की आयु सीमा भी प्रभावित हो रही है, जिससे उनकी चिंता और बढ़ गई है। अभ्यर्थियों के मुताबिक, प्रदेश में आयुर्वेदिक फार्मासिस्ट के लगभग 60 प्रतिशत पद खाली हैं। सरकार की ओर से 1002 पदों पर भर्ती निकाली गई थी, जबकि कुल स्वीकृत पद करीब 2100 हैं। इनमें से लगभग 1200 पद अब भी रिक्त पड़े हैं। उनका कहना है कि इतने बड़े पैमाने पर पद खाली होने से आयुष और स्वास्थ्य सेवाओं पर सीधा असर पड़ रहा है। ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में दवाओं के वितरण और फार्मेसी संचालन की व्यवस्था प्रभावित हो रही है। प्रदर्शन कर रहे अभ्यर्थियों ने मांग की कि कोर्ट में बेंच–वाइज निर्णय कराकर प्रक्रिया को आगे बढ़ाया जाए। साथ ही उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि यदि आवश्यक हो तो सरकार उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग (यूपीएसएसएससी) के माध्यम से लिखित परीक्षा आयोजित कर भर्ती प्रक्रिया पूरी कराए। अभ्यर्थियों का कहना है कि सरकार को स्वास्थ्य सेवाओं को ध्यान में रखते हुए इस मामले में प्राथमिकता से हस्तक्षेप करना चाहिए, ताकि लंबित भर्ती प्रक्रिया शीघ्र पूरी हो सके और प्रदेश की स्वास्थ्य व्यवस्था को मजबूती मिल सके।

शिवपाल बोले–झूठ बोलते हैं बिजली मंत्री

लखनऊ, संवाददाता। यूपी असेम्बली के बजट सत्र के आठवें दिन आज बुधवार को काफी गहमागहमी रही। सदन की कार्यवाही शुरू होते ही विपक्ष ने जनप्रतिनिधियों की गरिमा और अफसरों की मनमानी का मुद्दा जोरशोर से उठाया। विधायकों की शिकायत थी कि जिले के प्रशासनिक अधिकारी और पुलिसकर्मी उनका फोन तक रिसीव नहीं करते, जिससे जनहित के कार्य प्रभावित हो रहे हैं। इस गंभीर विषय पर हस्तक्षेप करते हुए विधानसभा अध्यक्ष ने कड़ा रुख अपनाया और स्पष्ट निर्देश जारी किए। उन्होंने कहा कि अधिकारी न केवल विधायकों का फोन उठाएं, बल्कि उन्हें उचित सम्मान भी दें।

पनवेल-अलीपुरद्वार साप्ताहिक नई अमृत भारत एक्सप्रेस की नियमित सेवा

भारतीय रेल द्वारा अपने सम्मानित रेलयात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए गाड़ी संख्या 11031/11032 पनवेल-अलीपुरद्वार-पनवेल साप्ताहिक नई अमृत भारत एक्सप्रेस की नियमित सेवा प्रारंभ करने का निर्णय लिया गया है, जिसका विवरण निम्नवत् है:-

गाड़ी सं. 11031/11032 पनवेल-अलीपुरद्वार-पनवेल (साप्ताहिक) अमृत भारत एक्सप्रेस

गाड़ी संख्या-11031 पनवेल-अलीपुरद्वार साप्ताहिक अमृत भारत एक्सप्रेस गाड़ी प्रारम्भिक स्टेशन से नियमित सेवा दिनांक 23.02.2026			गाड़ी संख्या-11032 अलीपुरद्वार-पनवेल साप्ताहिक अमृत भारत एक्सप्रेस गाड़ी प्रारम्भिक स्टेशन से नियमित सेवा दिनांक 26.02.2026	
आगमन	प्रस्थान	स्टेशन	आगमन	प्रस्थान
.....	11:50	पनवेल	05:30	.....
08:30	08:32	मानिकपुर	05:43	05:45
09:00	09:02	बरगढ़	04:20	04:22
10:25	10:30	प्रयागराज छिवकी	03:10	03:15
10:53	10:55	मेजा रोड	01:50	01:52
11:35	11:37	मिर्ज़ापुर	01:10	01:12
13:50	.....	अलीपुरद्वार	.....	04:45

- पनवेल से गाड़ी संख्या 11031, सोमवार, दिनांक : 23.02.2026
- अलीपुरद्वार से गाड़ी संख्या 11032, गुरुवार, दिनांक : 26.02.2026

गाड़ी संरचना : स्लीपर श्रेणी : 08, सामान्य श्रेणी : 11

नोट: ट्रेन की समय-सारणी से सम्बन्धित जानकारी हेतु हेल्पलाईन 139 या Rail Madad Mobile App या वेबसाइट www.railmadad.indianrailways.gov.in का प्रयोग करें।

उत्तर मध्य रेलवे

North central railways www.ncr.indianrailways.gov.in @CPRONCR 371/26 (AS)

सम्पादकीय.....

एआई समिट नयी चुनौतियां

सोमवार 16 फरवरी से नयी दिल्ली में भारत एआई इम्पैक्ट समिट 2026 की शुरुआत हुई, जो 20 फरवरी तक चलेगी। एआई पर यह दुनिया का अब तक का सबसे बड़ा कार्यक्रम है, जिसमें कम से कम 20 देशों के राष्ट्रप्रमुख, 50 से ज्यादा मंत्री और 40 से ज्यादा बड़े सीईओ हिस्सा लेने आ रहे हैं। गूगल के सुंदर पिचाई, ओपन एआई के सैम ऑल्टमैन, एंथ्रोपिक के डेरियो अमोडी, माइक्रोसॉफ्ट के ब्रैड स्मिथ, एडोब के शांतनु नारायण जैसे तकनीकी क्षेत्र के दिग्गजों के अलावा फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों और ब्राजील के राष्ट्रपति लुला दा सिल्वा भी इसमें शामिल हो रहे हैं। इन तमाम बड़ी हस्तियों की एक साथ एक बैनर के नीचे उपस्थिति यह बता रही है कि दुनिया ने एक बड़े बदलाव की तरफ कदम बढ़ा लिया है, जो ऊपरी तौर पर केवल तकनीकी से जुड़ा नजर आता है, लेकिन असल में इसका असर जिंदगी के हर हिस्से पर पड़ना शुरु हो चुका है। एआई यानी आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस या कृत्रिम बुद्धिमत्ता अब हर क्षेत्र में दिखाई देने लगी है। विज्ञान, शिक्षा, चिकित्सा, कृषि, व्यापार हर जगह अब एआई का सहयोग लिया जा रहा है। दशकों तक भू राजनैतिक आकलन बंद दरवाजों के पीछे विदेशी राजनयिकों और जांच एजेंसियों के भरोसे होता रहा, क्योंकि सरकारी दस्तावेज और अंदरूनी खबरों तक इन्हीं की पहुंच होती थी। थिंक टैंक्स, रिस्क एनालिस्ट्स (जोखिम विश्लेषकों) या मीडिया के आकलन सब राजनयिकों और जांच एजेंसियों के सूत्रों पर निर्भर होते थे। लेकिन अब एआई ने यह परिदृश्य भी बदल दिया है। अब एआई की मदद से विभिन्न देशों में लिए जा रहे फैसलों, सेटेलाइट छवियों, आयात–निर्यात, पूंजी का प्रवाह, मीडिया में चलाई जा रही खबरों सब पर निगाह रखने के साथ तुरंत ही उसका विश्लेषण भी किया जा रहा है। नतीजा ये है कि एक देश के हालात का असर दूसरे देश पर पड़ने में पहले जितना वक्त लगता था, अब वो कुछ पलों में सिमट चुका है। ऐसे महत्वपूर्ण समय परिदृश्य में भारत में इस एआई समिट के होने के खास मायने हैं, क्योंकि दुनिया इसे ग्लोबल साउथ की बढ़ती ताकत के नजरिए से देख रही है। औपनिवेशिक दासता से मुक्त देश तीसरी दुनिया कहलाते रहे हैं, अब एशिया, अफ्रीका, लैटिन अमेरिका के ऐसे तमाम देश ग्लोबल साउथ का हिस्सा कहलाते हैं। ग्लोबल साउथ एक भौगोलिक शब्द न होकर भू–राजनीतिक और आर्थिक धारणा है। एआई समिट का भारत में होना तीसरी दुनिया के उन तमाम देशों के लिए भी महत्वपूर्ण हो गया है, जिनके डेटा तक वैश्विक शक्तियों की पहुंच है। इन देशों के राजनैतिक, आर्थिक फैसलों पर वैश्विक शक्तियां इसी डेटा की मदद से प्रभाव डालती हैं। और इसमें एआई की मदद ली जाती है। ऐसे में इस समिट के दौरान कुछ बड़े सवाल सामने आ रहे हैं, जैसे क्या भारत बड़ी वैश्विक शक्तियों के सामने अपने डेटा को सुरक्षित रखने के लिए आवाज उठा सकेगा, क्योंकि राहुल गांधी ने संसद में और बाद में भी एआई के खतरों और संभावनाओं दोनों को खुल कर सरकार के सामने रखा है। राहुल ने कहा, एआई क्रांति आ गई है, जो खतरे और मौके दोनों लेकर आ रही है। आईटी और सर्विसेज सेक्टर, हमारी अर्थव्यवस्था का चमकता सितारा है वो खतरे में है। अगर हम आने वाले तूफान के लिए तैयार नहीं हुए तो हजारों सॉफ्टवेयर इंजीनियर और प्रोफेशनल अपनी रोजी–रोटी खो देंगे लेकिन हमारे पास मौके भी हैं। राहुल गांधी ने कहा, डेटा वो पेट्रोल है जो एआई इंजन को चलाता है। जैसा कि मैंने संसद में कहा था कि भारत की सबसे बड़ी संपत्ति हमारे शानदार लोग हैं और वह बहुत सारा डेटा जो हम बनाते हैं। राहुल ने एआई समिट की मेजबानी पर कहा कि यह भारत के लिए नेतृत्व दिखाने का एक मौका होना चाहिए था, यह दिखाने का कि 1.4 बिलियन लोगों का देश अपने डेटा का इस्तेमाल करके ग्लोबल एआई फ्यूचर को अपनी शर्तों पर कैसे बना सकता है। लेकिन बेबस प्रधानमंत्री मोदी ने ट्रेड डील में अमेरिका के श्चोकहोल्ड्य के आगे समर्पण कर दिया है। राहुल ने देश को सावधान करते हुए कहा कि श्भारत में 1.5 बिलियन भारतीयों का डेटा सुरक्षित रूप से स्टोर करनाश, श्अपने सोर्स कोड और एल्गोरिदम में पारदर्शिता लानाश, श्हमारे डेटा का इस्तेमाल करके होने वाले मुनाफे पर टैक्स लगाना मुश्किल होगी। राजनैतिक पूर्वाग्रह से ऊपर उठकर राहुल गांधी की इस बात पर ध्यान देने की जरूरत है। क्योंकि अभी भारत को यह देखना है कि हमारा आईटी सेक्टर एआई के इस दौर के लिए कब पूरी तरह तैयार होगा। चौट जीपीटी जैसे बड़े लार्ज लैंग्वेज मॉडल भारत को खुद बनाने चाहिए, या छोटे–छोटे सेक्टर जैसे कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा के लिए खास एआई टूल पर फोकस करना चाहिएच एआई को चलाने के लिए बहुत सारे डेटा सेंटर चाहिए, जो बिजली और पानी बहुत इस्तेमाल करते हैं। क्या इससे पर्यावरण को नुकसान होगा?

ऐसे कई सवालों पर इस समिट में चर्चा हो, तभी इसकी सार्थकता है। वैसे भारत सरकार ने इरादा जताया है कि एआई सिर्फ बड़े देशों का खेल न रहे, बल्कि सभी देशों के लिए फायदेमंद हो। इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी सेक्रेटरी एस कृष्णन ने कहा है कि हमारा ध्यान पीपल, प्लैनेट और प्रोग्रेस पर है। यानी एआई ऐसे बने जो आम लोगों की समस्याएं हल करे, पर्यावरण को नुकसान न पहुंचाए और प्रगति करे। वहीं इंडिया एआई मिशन के सीईओ अभिषेक सिंह ने कहा, श्अभी एआई कुछ ही देशों में बनता है और बाकी दुनिया सिर्फ इस्तेमाल करती है। अगर डेटा सबको शामिल न करे तो एआई में पक्षपात झलकने लगता है। इसलिए समिट में एआई को लोकतांत्रिक बनाने पर जोर है। बता दें कि इससे पहले 2023 में ब्रिटेन के ब्लेटचली पार्क में एआई सेफ्टी समिट हुआ, जहां 28 देशों ने एआई के खतरों पर ब्लेटचली घोषणापत्र पर हस्ताक्षर किए थे। 2024 में सियोल में समिट हुआ, जिसमें नवाचार और सबको शामिल करने पर बात हुई। 2025 में पेरिस के एआई एक्शन समिट में आर्थिक फायदों पर जोर दिया गया था, लेकिन अब उसे लोकतांत्रिक बनाने की बात कही जा रही है। देखना होगा कि भारत इस मुहिम में कामयाब होता है या नहीं। क्योंकि देश में तकनीकी को लेकर जिस व्यापक पैमाने पर जागरुकता आनी चाहिए, उसका पूरी तरह अभाव है। कॉलेजों में भजन क्लबिंग के आयोजन हो रहे हैं। प्रधानमंत्री मोदी भी एआई की गंभीरता को दरकिनार कर हमारे यहां बच्चा सबसे पहले आई बोलता है, जैसे बेतुके बयान दे चुके हैं। ऐसे में इतने बड़े आयोजन से सरकार क्या केवल अपना प्रचार देश–दुनिया में करवाना चाहेगी, या तकनीकी की संभावनाओं और वास्तविक खतरों को समझ कर देश हित में फैसले लेगी, ये देखना होगा।

अमरीका का ट्रम्प कार्ड और पाकिस्तान की छटपटाहट

ऋतुपर्ण दवे

अगर कहा जाए कि मौजूदा अमरीका के पास 'ट्रम्प कार्ड' है जो कब चल दे, कोई नहीं जानता, तो गलत नहीं होगा। पाकिस्तान के रक्षा मंत्री ख्वाजा आसिफ का तल्खी भरा कहें या दर्द भरा बयान यही बताता है। गत दिवस वह नैशनल असैंबली में अमरीका की पाकिस्तान के प्रति भूमिका पर बोलते समय कुछ ऐसा बोल गए, जिसकी चर्चा इन दिनों पूरी दुनिया में है। उन्होंने कहा कि अमरीका ने पाकिस्तान का अपने सामरिक हितों के लिए हमेशा इस्तेमाल किया, उसके बाद टॉयलैट के पेपर जैसा छोड़ दिया। निश्चित रूप से इतना तो समझ आता है कि भारत के साथ हुई ट्रेड डील के बाद पाकिस्तान में बेचैनी जरूर दिख रही थी। अन्दरूनी तौर पर पाकिस्तान इतना घबराया हुआ और परेशान होगा, यह लगता नहीं था। अमरीका ने इस्लाम को इस्लाम के खिलाफ खड़ा कर अपना मतलब साध लिया और स्वार्थी पाकिस्तान समझते हुए भी अनजान बना रहा। जब भारत से अमरीका की चंद दिनों पहले की नजदीकी समझ आई तो दर्द छलकने लगा। पाकिस्तान अच्छे से समझता था कि अफगानिस्तान की जमीन पर लड़े गए दो युद्ध न तो इस्लाम के हित में थे न ही मजहब से प्यार करने वालों के। हकीकत रूप से अब लगने लगा है कि पाकिस्तान–अमरीका के बीच मुनीर और शहबाज शरीफ के चापलूसी भरे रिश्ते पर भी अमरीकी राष्ट्रपति का ट्रम्प कार्ड चल गया है। खिसियाए पाकिस्तान और उसके रक्षा मंत्री के बयान के बाद, अब अंतर्राष्ट्रीय मायने चाहे जो निकाले जाएं लेकिन यह समझ आने लगा है कि पाकिस्तान की स्थिति 'उगलत लीलत पीर घनेरी' जैसी हो गई है, जाए तो जाए कहां? हालांकि ख्वाजा आसिफ अब मानते हैं कि पाकिस्तान ने सोवियत संघ के खिलाफ और 2001 के बाद अमरीका के नेतृत्व वाले युद्धों में भाग लिया था जो धार्मिक जेहाद कतई नहीं कहा जा सकता, बल्कि यह राजनीतिक लाभ और दुनिया की बड़ी शक्तियों का समर्थन प्राप्त करने बाबत था। आर्थिक रूप से टूट चुके और एक तरह से आंतरिक युद्ध के दौर से गुजर रहे पाकिस्तान को पहले ही समझना था कि ज्यादा मिठास में कीड़े पड़ जाते हैं। बहरहाल मौजूदा दौर में पाकिस्तान के सैन्य प्रमुख असीम मुनीर और प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ की ट्रम्प की चापलूसी कर–कर के बनाए गए संबंधों में न केवल कड़वाहट आ रही, बल्कि कीड़े भी पड़ रहे हैं। शायद पाकिस्तान यह भूल गया है कि अच्छा पड़ोसी उसका सही हितैषी होता है। लेकिन उसने तो शुरू से भारत को अपना दुश्मन मान रखा था, जिसके नतीजे अब दुनिया देख रही है कि पाकिस्तान खुद ही अपने बुने जाल में फंस कर कैसे फडफड़ा रहा है। पाकिस्तान की बौखलाहट इसी से समझ आती है कि उसके मौजूदा हुक्मरान खुद ही अपनी पोल खोल रहे हैं। अब आसिफ द्वारा की गई आलोचना उनकी छाती पीटने वाली मानसिक स्थिति जैसी है। वे इतने परेशान और व्यग्र हैं कि पूर्व सेना प्रमुखों जनरल जिया–उल–हक और परवेज मुशर्रफ की खुलकर आलोचना करते हुए यह कहने से भी नहीं हिचकते कि दोनों ने अमरीका को अफगानिस्तान युद्ध के लिए अपना पोर्ट और एयरस्पेस देकर दोगलई की। दोनों ने इस लड़ाई की खातिर अपनी रीति–नीति भी बदल दी, जिसे आज पाकिस्तान भुगत रहा है। अब आसिफ को अफगानिस्तान की तबाही याद आने के साथ–साथ खुद की गलतियां भी नजर आने लगी हैं, जिसके चलते न केवल लाखों लोग प्रभावित हुए, तबाह हुए, बल्कि पीढियां भी बर्बाद हुईं। वे इसे पाकिस्तान का 'यूज एंड थ्रो' बताते हुए यहां तक कहते हैं कि हकीकत में यह किराए का एक युद्ध था, जिसमें पाकिस्तान का अमरीका ने अपने सामरिक हितों के लिए खासा इस्तेमाल किया और मतलब निकलते ही छोड़ दिया। यकीनन टुकड़े फैंक कर पाकिस्तान का इस्तेमाल किया गया। क्या यह सब भारत के साथ हुई डील के बाद पाकिस्तान को समझ आया? पाकिस्तान जब झोली लेकर भीख मांगते हुए अमरीका के सामने खड़ा होता था, तब यह पुरानी बातें याद क्यों नहीं रहती थीं? जब तक उसकी झोली में अमरीकी डॉलर बतौर भीख आते रहे तो मुंह बंद रहता था। तब भी क्या पाकिस्तान इतना अनजान था? अमरीका की भारत के प्रति नरमी कहें या नए व्यावसायिक क्षेत्र में साथ आने का इशारा, उससे भी पाकिस्तान परेशान है। इधर अमरीका ने दक्षिण एशिया और पश्चिमी इंडो–पैसिफिक क्षेत्र, जो ड्क्षहद महासागर और प्रशांत महासागर को जोडने वाला एक महत्वपूर्ण समुद्री और भू–राजनीतिक क्षेत्र है और अफ्रीका के पूर्वी तट से अमरीका के पश्चिमी तट तक फैला है, को लेकर जैसे ही भारत को भरोसेमंद सहयोगी बताया, पाकिस्तान को मानो सांप सूंघ गया। पाकिस्तान को डर क्यों लगा क्योंकि यह विश्व का सबसे बड़ा व्यापारिक मार्ग और 65 प्रतिशत आबादी वाला क्षेत्र है, जो आध्थक, सामरिक और सुरक्षा दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण है। अब पाकिस्तान के हुक्मरानों को अपनी एक–एक गलती याद आ रही है। उसके कई नेता इस बात पर छाती पीटते दिख रहे हैं कि अफगानिस्तान किन नीतियों से तबाह हुआ! अब वहां संसद में खुलेआम स्वीकारा जा रहा है कि दुनिया अनजान बनकर नहीं रह सकती। निश्चित रूप से पाकिस्तान–अमरीका संबंध एक खतरनाक मोड़ पर हैं। देर आयद दुरुस्त आयद का अलाप पाकिस्तान कब तक अलापेगा और इससे होगा क्या? दुनिया जानती है कि डोनॉल्ड ट्रम्प बतौर ट्रम्प कार्ड कब कौन सी चाल चल जाएं, कोई नहीं जानता!

समकालीन परिप्रेक्ष्य में लोक कथाओं की प्रासंगिकता

अंजलि श्रीवास्तव

जब समाज तीव्र परिवर्तन के दौड़ से गुजरता है, तब वह अपने जड़ों की ओर लौट कर ही स्थिरता और संतुलन खोजता है। आज का समकालीन समाज तकनीकी विस्तार वैश्वीकरण और बदलती जीवन शैली के प्रभाव में निरंतर रूपांतरित हो रहा है। संचार के साधनों ने दूरियां अवश्य घटाई है, परंतु आत्मीय संवाद का संकट भी उतना ही गहरा हुआ है। ऐसे समय में लोक कथाएं केवल अतीत की स्मृति भर नहीं बल्कि समाज के सामाजिक चेतना का जीवंत स्वर बनकर हमारे सामने उपस्थित होती है।

लोककथाएं पीढ़ी दर पीढ़ी जनमानस की धरोहर

रूप में संरक्षित रही है। वे हमें धैर्य, परिश्रम, करुणा और साहस जैसे मानवीय मूल्यों का बोध कराती है। बिना उपदेशात्मक हुए सहज और रोचक ढंग से वे संस्कारों का संचार करती हैं। ष्सच के डगर भले कठिन हो, अंततः विजय उसी की होती हैष और ष्जैसी करनी वैसी भरनीष लोकोक्तियां लोकजीवन के अनुभव– सत्य को सरल भाषा में अभिव्यक्त करती है । इस प्रकार लोककथाएं नैतिक शिक्षा की प्रथम पाठशाला सिद्ध होती हैं। समकालीन संदर्भ में लोककथाओं का एक महत्वपूर्ण पक्ष उनकी सामूहिकता है। वे किसी एक वर्ग की संपत्ति नहीं बल्कि पूरे समाज की साझी धरोहर है। जाति वर्ग और क्षेत्रीय विविधताओं के बावजूद उनमें निहित मानवीय अनुभव सबको जोड़ता है। इस दृष्टि से लोककथाएं सामाजिक एकता और संस्कृत निरंतरता की वाहक है। वे स्मरण कराती हैं कि समाज का निर्माण केवल आधुनिक संसाधनों से नहीं बल्कि साझा स्मृतियां और परंपराओं से भी होता है।

लोक कथाओं में स्त्री की उपस्थिति भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वह केवल करुणा के प्रतीक नहीं बल्कि बुद्धिमत्ता धैर्य, और निर्णय क्षमता की धुरी के रूप में सामने आती हैं। अनेक कथाओं में वह संकट की घड़ी में परिवार और समाज को दिशा देती है। अन्याय का प्रतिरोध करती हैं और परिस्थितियों से जूझने का साहस दिखाती है। यह प्रस्तुति समकालीन स्त्री– विमर्श संदर्भ में अत्यंत प्रासंगिक है।

वैश्वीकरण के प्रभाव ने सांस्कृतिक सीमाओं को विस्तृत किया है, पर साथ ही सांस्कृतिक समरूपता का खतरा भी उत्पन्न किया है। ऐसे में लोककथाएं हमारे सांस्कृतिक पहचान की रक्षा करती हैं वे हमें अपनी भाषा, लोक–जीवन और जीवन –दृष्टि से जोड़ती हैं। आधुनिकता का अर्थ परंपरा से विच्छेद नहीं, बल्कि उसके साथ संवाद स्थापित करना है। लोक कथाएं इस संवाद की सेतु बन सकती हैं।

इंटरनेट ऑनलाइन मंचों के विस्तार ने इन्हें वैश्विक स्तर पर पहुंचाया है। पुनर्पाठ और पुनर्सृजन के माध्यम से लोक कथाएं आज भी नई पीढ़ी को प्रभावित कर रही है। अतः स्पष्ट है कि समकालीन समाज में लोककथाओं का महत्व केवल सांस्कृतिक धरोहर, के रूप में नहीं बल्कि ष्नैतिक , सामाजिक ष्और बौद्धिक मार्गदर्शन के रूप में भी है। वे हमें हमारे जड़ों से जोड़ते हुए वर्तमान को समझने और भविष्य की दिशा निर्धारित करने की दृष्टि प्रदान करती है। बदलते समय में भी लोककथाएं हमें यह विश्वास दिलाती है कि मूल्य स्थिर रह सकते हैं और परंपरा तथा आधुनिकता का संतुलन संभव है। लोक कथाएं अतीत की विरासत मात्र नहीं, बल्कि वर्तमान की आवश्यकता और भविष्य की संभावनाओं का आधार है।

सावरकर को 'भारत रत्न' देने की मांग को लेकर विवाद

हिंदू विचारक विनायक दामोदर सावरकर को भारत रत्न देने की मांग ने कांग्रेस के नेतृत्व वाले विपक्ष और भाजपा के बीच चल रही राजनीतिक बहस को फिर से शुरू कर दिया है, जिससे उनके विचारों, विश्वासों और भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी भूमिका को लेकर गहरे मतभेद सामने आए हैं। इस मुद्दे ने पहली बार 2019 में बड़ा राजनीतिक तूल पकड़ा, जब भाजपा की महाराष्ट्र इकाई ने सावरकर को भारत रत्न देने की सिफारिश की, जबकि कांग्रेस ने इस पर तीखा हमला किया। यह मांग 2024 में भी फिर से उठी, जब शिवसेना (यू.बी.टी.) प्रमुख उद्धव ठाकरे ने सवाल किया कि सावरकर को भारत रत्न पुरस्कार क्यों नहीं दिया गया। 1883 में नासिक के पास भगूर में दामोदर और राधाबाई सावरकर के घर जन्मे, उनकी शुरुआती जिंदगी उत्तरजीविता और व्यावहारिक चयनों से भरी थी, जैसे कि अंग्रेजों से बातचीत करना और दया याचिकाएं दायर करना, जिसने उनकी जटिल विरासत को आकार दिया। बहुत से लोग सावरकर को भारत रत्न देने का विरोध करते हैं क्योंकि उन्होंने अंडेमान की सेलुलर जेल से अंग्रेजों को दया याचिकाएं लिखी थीं। आलोचकों का मानना है कि ये याचिकाएं सालों की कुर्बानी से ज्यादा कमजोरी दिखाती हैं। टॉर्चर खत्म करके नॉर्मल जिंदगी में लौटना इंसान की एक स्वाभाविक इच्छा है। सावरकर ने शहीद बनने की बजाय जिंदा रहना चुना। उनका मानना था कि एक जिंदा क्रांतिकारी, भले ही उसे पाबंद किया गया हो, अंडेमान में मरे हुए हीरो से ज्यादा देश के लिए कर सकता है। सावरकर ने ब्रिटिश सरकार से अपनी याचिकाओं में माफी नहीं मांगी। एक काबिल वकील होने के नाते, उन्होंने कैदियों की स्थिति पर सफाई मांगी। उन्होंने कहा कि उन्हें इस डरावनी जगह पर बिना यह जाने कि उन्हें आम कैदी माना जाता है या पॉलिटिकल कैदी, कैद कर दिया गया था। सावरकर को इस शर्त पर रिहा किया गया कि वह पॉलिटिक्स में शामिल नहीं हो सकते और उन्हें रत्नागिरी जिले में ही रहना होगा। सावरकर ने खुद को एक समाज सुधारक के तौर पर पेश किया जो छुआछूत को खत्म करने के लिए समर्पित थे, इस मुद्दे पर उन्होंने बहुत काम किया। हालांकि, उन्होंने क्रांतिकारी आंदोलन के लिए भूमिगत समर्थन भी बनाए रखा। उन्होंने रत्नागिरी में पतित पावन नाम का एक मंदिर बनवाया, जो सभी समुदायों और जातियों के लोगों के लिए खुला था। इस पहल से ऊंची जाति के हिंदू परेशान हो गए। हाल ही में नेहरू आर्काइव से मिले दस्तावेजों से पता चलता है कि भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन को विनायक दामोदर सावरकर को देश का सबसे बड़ा नागरिक सम्मान भारत रत्न न देने की सलाह दी थी। यह बात सावरकर की विरासत और इससे पैदा हुए राजनीतिक मतभेदों को लेकर चल रही बहस को और गहरा करती है। जून, 1963 में, नेहरू ने लिखा, ''मैं आपका वह पत्र लौटा रहा हूं जिसमें श्री सावरकर को भारत रत्न देने का सुझाव दिया गया है। हालांकि उन्होंने आजादी की लड़ाई में योगदान दिया था लेकिन बाद में वह विवादों में आ गए। मुझे नहीं लगता कि हमें यह सुझाव मानना चाहिए।'' जबकि उस समय के कई सुधारकों ने हिंदू धर्म के ढांचे के अंदर 'अछूतों' को ऊपर उठाने की कोशिश की, सावरकर एक तर्कवादी थे, जो इस ढांचे को पूरी तरह से खत्म करना चाहते थे। उन्होंने सिर्फ उपदेश नहीं दिए, उन्होंने अपनी मान्यताओं के समर्थन के लिए कदम भी उठाए। उन्होंने पतित पावन मंदिर बनवाया, जो भारत के उन पहले मंदिरों में से एक था, जहां सभी जातियों के लोगों का स्वागत किया जाता था, जिनमें उस समय अछूत माने जाने वाले लोग भी शामिल थे। एक दलित पुजारी को नियुक्त करके और अंतरजातीय खाने और शादी को बढ़ावा देकर, उन्होंने सामाजिक नियमों को चुनौती देने की कोशिश की। उनकी कोशिशों का मकसद अलग–अलग समुदायों के बीच सम्मान जगाना, बराबरी को बढ़ावा देना और सामाजिक सुधार को बढ़ावा देना था। सार्वजनिक रिकॉर्ड से पता चलता है कि सावरकर को गिरफ्तार किया गया था और उन पर साजिश का आरोप लगाया गया था। फिर भी, 10 फरवरी, 1949 को, जज आत्मा चरण की अध्यक्षता वाली लाल किले की स्पैशल कोर्ट ने उन्हें बरी कर दिया। सभी सबूतों की समीक्षा, जिसमें अप्रूवर दिगंबर बडगे की गवाही भी शामिल है, इसमें शामिल कानूनी प्रक्रिया को रेखांकित किया गया है। इंडियन एविडेंस एक्ट के तहत, किसी साथी के सबूत को भरोसेमंद होने के लिए स्वतंत्र सबूतों से पुष्टि की जानी चाहिए। प्रॉसिक्यूशन यह देने में नाकाम रहा। सावरकर के पोते, राजेंद्र सावरकर ने केंद्र सरकार से अपने दादा के 'स्वतंत्रवीर' टाइटल को मान्यता देने की मांग की है, यह कहते हुए कि यह मोहनदास कर्मचंद गांधी को दिए गए 'महात्मा' टाइटल जैसा होगा।

रश्मि देसाई के लिए गंदे शब्द कहते थे..इस एक्ट्रेस ने सिद्धार्थ शुक्ला को लेकर किया दावा, रैगिंग का भी लगाया आरोप

दिवंगत एक्टर सिद्धार्थ शुक्ला भले ही अब इस दुनिया में नहीं हैं, लेकिन फैंस अक्सर उन्हें समय–समय पर याद करते रहते हैं और उनसे जुड़ी यादें सोशल मीडिया पर शेयर करते रहते हैं। इसी बीच हाल ही में टीवी शो 'शक्तिमान' फेम एक्ट्रेस वैष्णवी मैकडोनाल्ड ने दिवंगत एक्टर सिद्धार्थ लेकर शॉकिंग दावा किया और कहा कि 'दिल से दिल तक' शो के सेट पर वो रश्मि देसाई और जैस्मिन भसीन के साथ अपमानजनक भाषा का इस्तेमाल करते थे। दरअसल, वैष्णवी मैकडोनाल्ड ने एक्टर सिद्धार्थ शुक्ला के साथ टीवी सीरियल 'दिल से दिल तक' में उनकी मां का रोल निभाया था। तो हाल ही में एक इंटरव्यू में उनसे पूछा गया कि क्या उनका सिद्धार्थ के साथ मजबूत रिश्ता था। तो उन्होंने इस पर बात से इनकार करते हुए कहा कि शूटिंग के पहले दिन सिद्धार्थ उनसे मिले थे। तब उन्हें वो क्यूरियस और समझदार लगे थे। वैष्णवी ने आगे कहा कि बिग बॉस में उनकी जो छवि दिखाई गई वो असल में वैसे नहीं थे। शो में उन्हें अच्छा और स्वीट दिखाया गया। शहनाज गिल के साथ उनकी प्यार भरी लव स्टोरी को दिखाया गया, जिससे उनका मानना है कि कहानी का रुख बदल गया। एक्ट्रेस ने रश्मि देसाई और जैस्मिन भसीन के साथ एक्टर के व्यवहार का भी खुलासा किया और बताया कि जब वो रश्मि के बारे में बोलते थे और जो कुछ भी हो रहा था वो उन्हें परेशान करता था। वो यह नहीं कहती हैं कि रश्मि एकदम परफेक्ट हैं। वैष्णवी ने बताया कि सिद्धार्थ बहुत भद्दे शब्दों का इस्तेमाल करते थे। 'बिग बॉस' में जो दिखाया गया, वो उसके बिल्कुल उलट थे। वहीं, रश्मि को लेकर उन्होंने कहा कि वो एकदम अलग हैं। अपनी मांगे अलग तरीके से रखती थीं। गलत शब्दों का इस्तेमाल नहीं करती थीं। एक्ट्रेस ने आगे कहा कि सिद्धार्थ शुक्ला गलत थे। उन्हें याद है और उस समय कुछ ऐसा माहौल बनाया जा रहा था कि रश्मि को गलत तरीके से पेश किया जा रहा था। जैसे वही समस्या पैदा करती हों। वैष्णवी के मुताबिक, सेट पर सिद्धार्थ का महिलाओं के साथ व्यवहार सम्मानजनक नहीं था। वो रश्मि और जैस्मिन दोनों के साथ कभी दोस्त बनते, कभी किसी के साथ मिलकर दूसरी को टारगेट करते। उन्होंने सिद्धार्थ पर सेट पर उनके साथ रैगिंग का भी आरोप लगाया और कहा कि वो उनके लिए गंदी भाषा का इस्तेमाल करते थे। बातें सबके सामने होती थीं। इसके साथ ही वैष्णवी ने एक घटना को भी याद किया और बताया कि एक बार उनका शॉट तैयार था लेकिन सिद्धार्थ गुस्से में उन्हें देख रहे थे। शायद रश्मि और जैस्मिन उनके व्यवहार को मजाक में लेती थीं इसलिए उन्होंने कभी कुछ नहीं कहा। एक्ट्रेस का कहना है कि अगर वो आवाज उठातीं तो वो उनका साथ जरूर देतीं। उन्होंने खुद इस व्यवहार को नजरअंदाज किया ताकि प्रोड्यूसर को नुकसान ना हो। एक समय ऐसा भी आया था जब सिद्धार्थ को सेट से बाहर जाने को कहा गया था लेकिन बाद में चौनल की मांग पर उन्हें वापस बुला लिया गया था। बता दें, सिद्धार्थ शुक्ला का सितंबर, 2021 को निधन हो गया था। उनका निधन हार्ट अटैक से हुआ था, जिससे उनके फैंस और इंडस्ट्री के बीच शोक की लहर दौड़ गई थी। सिद्धार्थ कई टीवी शोज में नजर आए थे, लेकिन उन्हें सबसे ज्यादा पॉपुलैरिटी बिग बॉस 13 से मिली थी और वो इस शो के विनर भी रहे थे।

बढ़े वजन को लेकर ट्रोल हुए राजकुमार तो पत्नी पत्रलेखा ने किया सपोर्ट, लिखा–फेम के पीछे एक्टर की जिंदगी खून, पसीने

एक्टर राजकुमार राव इन दिनों अपनी अपकमिंग फिल्म निकम के लिए जी तोड़ मेहनत कर रहे हैं। अपने किरदार में जान फूंकने के लिए राजकुमार राव ने जबरदस्त ट्रांसफॉर्मेशन किया है। इसी बीच उन्हें एक इवेंट में स्पॉट किया गया, जहां उनका बढ़ा हआ वजन और हेयरस्टाइल देख फैंस हैरान रह गए और कई लोग उन्हें ट्रोल भी करने लग गए। वहीं, अब राजकुमार की ऑनलाइन ट्रोलिंग देख उनकी पत्नी पत्रलेखा खुलकर सामने आई और ट्रोलर्स को करारा जवाब देकर उनकी बोलती बंद की है। दरअसल, राजकुमार राव का ये ट्रांसफॉर्मेशन उनकी आगामी बायोपिक निकम के लिए है, जिसकी वह इन दिनों शूटिंग कर रहे हैं। ऐसे में पत्रलेखा ने अपने पति को ट्रोलर्स से बचाते हुए पोस्ट किया। पत्रलेखा ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरीज में शेयर किए एक पोस्ट में लिखा–आप पर बहुत गर्व है, राजकुमार राव। आप हर फिल्म प्रोजेक्ट के लिए अपना सब कुछ देते हैं। दुनिया उस प्रोसेस और मेहनत को नहीं देखती जो एक एक्टर के किरदार को बनाने में लगता है। आखिरी नतीजा हमेशा आसान दिखता है। नजर आने वाले सारे फेम और ग्लैमर के पीछे, एक एक्टर की जिंदगी खून, पसीने, आंसुओं और पर्सनल लाइफ के त्याग से भरी होती है। वहीं, अपने वीडियो और फोटो ऑनलाइन आने के बाद राजकुमार ने भी सफाई दी थी और इंस्टाग्राम पोस्ट में लिखा था– मेरा होना मेरी कला के जरिए है। अभी–अभी अपनी अगली बायोपिक रुछप्ज्ञ ।ड की शूटिंग खत्म की है और हां, इसके लिए मुझे फिजिकली बदलना पड़ा है, जो मुझे करना पसंद है। मुझे प्रोस्थेटिक में यकीन नहीं है, जब तक मैं अपनी मेहनत से वह लुक पा सकूं जो मैंने निकम में हासिल किया है, चाहे वह वजन बढ़ाना हो या बूढ़ा दिखना हो या अपने बाल पतले करना हो, जिसके मेरे हेयर स्टाइलिस्ट बहुत खिलाफ थे, लेकिन सबने मुझसे कहा कि बोस के लिए भी आधा गंजा मत होना और इतना वजन मत बढ़ाना या ज्त।च्च्म्क के लिए खाना बंद मत करना और इतना वजन कम मत करना या श्रीकांत के दौरान जब कैमरे नहीं चल रहे हों तब भी एक नेत्रहीन व्यक्ति की तरह व्यवहार मत करना। निकम के लिए मुझे लगभग 9–10 किलो वजन बढ़ाना पड़ा और मैं 2 पिज़्जा और बहुत सारी मिठाइयां और मेरे पसंदीदा आलू पराठे, बिरयानी खा रहा था और रोल के हिसाब से दिखने के लिए कुछ भी ग्लैमरस नहीं इस्तेमाल कर रहा था। उम्मीद है जब आप जल्द ही रिलीज होने वाली फिल्म देखेंगे तो आपको फिल्म में मेरी सारी मेहनत दिखेगी और अब यह बदलाव का दौर है और इन एक्स्ट्रा ाहे को कम करने और गांगुली मोड में आने के लिए तैयार होने का समय है। हमारे अपने दादा। अपने काम के जरिए आपको जोड़ने, आपका मनोरंजन करने के लिए हमेशा कड़ी मेहनत करेंगे। बहुत सारा प्यार।

फिर से प्रेमानंद जी महाराज की शरण में पहुंचे अनुष्का-विराट, भक्तों के बीच बड़े ही ध्यान से बाबा को सुनते दिखे विरुष्का

फिल्म इंडस्ट्री और खेल जगत के पावर कपल विराट कोहली और अनुष्का शर्मा अक्सर किसी न किसी वजह को लेकर सुर्खियों में रहते हैं। यह कपल फैंस के बीच अपनी सादगी और अध्यात्मिक मार्ग को लेकर ज्यादा फेमस है। हाल ही में इस दंपत्ति को वृंदावन के प्रेमानंद जी महाराज से मुलाकात करते हुए देखा गया, जहां से उनकी एक झलक भी सोशल मीडिया पर सामने आई है। दरअसल, हाल ही में अनुष्का और विराट कोहली वृंदावन पहुंचे, जहां उन्होंने संत प्रेमानंद महाराज से मुलाकात की जानकारी के मुताबिक, विरुष्का आज सुबह करीब 5.30 बजे प्रेमानंद जी के आश्रम पहुंचे और यहां करीब आधा से एक घंटा रुके। इस दौरान दोनों का सादगी भरा अंदाज देखने को मिला। दोनों अन्य भक्तों के साथ प्रेमानंद जी की शरण में बैठे नजर आए। इस दौरान कपल भक्ति के रस में डूबा दिखा। दोनों ने गले में तुलसी माला पहनी, जो सबका ध्यान खींचती दिखी। बता दें, इससे पहले बीते सोमवार सुबह विराट–अनुष्का एयरपोर्ट पर स्पॉट हुए थे, जहां दोनों के लुक ने खूब सुर्खियां बटोरी थीं। बता दें, विराट–अनुष्का कोई पहली बार प्रेमानंद महाराज की शरण में नहीं पहुंचे हैं। इससे पहले उन्होंने जनवरी 2023 में पहली बार महाराज से मुलाकात की थी। फिर जनवरी 2025 दोनों अपने बच्चों के साथ आश्रम पहुंचे थे। इसके बाद मई और दिसंबर में कपल महाराज से मुलाकात करने पहुंचा था और अब फिर से दोनों बाबा की शरण में पहुंचे हैं।

बैसाखी के सहारे चलते दिखे ऋतिक रोशन, हेल्थ अपडेट देते हुए बोले–मेरा शरीर ऑन,ऑफ होता रहता है

बॉलीवुड के 'ग्रीक गॉड' कहे जाने वाले ऋतिक रोशन अपनी फिटनेस, डांस और दमदार पर्सनैलिटी से हमेशा अपने फैंस का दिल जीतते हैं। वहीं, हाल ही में एक्टर का एक ऐसा वीडियो सामने आया, जिसे देख उनके फैंस चिंतित हो गए। दरअसल, वीडियो में ऋतिक बैसाखी के सहारे चलते नजर आए, जिसे देख फैंस उन्हें उनका हाल पूछने लग गए। ऐसे में अब ऋतिक ने खुद सोशल मीडिया पर अपनी सेहत को लेकर खुलकर बात की है। ऋतिक रोशन ने हेल्थ अपडेट देते हुए अपने पोस्ट में लिखा–आज पूरे दिन बाएं घुटने में दर्द रहा, जो कल अचानक दो दिन के लिए गायब हो गया। अब ये मेरे रूटीन का हिस्सा बन गया है। हम सभी ऐसे शरीरों में रहते हैं जिनकी कार्यप्रणाली को हम कभी पूरी तरह से समझ नहीं पाएंगे। लेकिन मेरा शरीर एक अनोखा और दिलचस्प मामला है। शरीर के प्रत्येक अंग में अपना–अपना ऑनध्ऑफ बटन होता है और मेरा बायां पैर हमेशा से ये ऑन,ऑफ फीचर इस्तेमाल करता आया है। बायां कंधा और एंकल भी इसी तरह काम करता है। बस अचानक से ऑफ हो जाते हैं। ये मूड है। ऋतिक ने आगे लिखा–इस सिंपल प्रोडक्ट फीचर ने मुझे ऐसे एक्सपीरियंस दिए हैं, जो अधिकांश इंसानों को प्राप्त नहीं होते। मैं अपने दिमाग में घोर निराशा से भरे न्यूरॉन्स के साथ गर्व से घूमता रहता हूं। मैं एक यूनिक सिनैप्स सिस्टम का ओनर जिसने अंधेरी सुरंगों के भंवर बनाने में महारत हासिल कर ली है, जो मुझे तेजी से कई तरह की खाईयों में ले जाती हैं। यह सब मुझे ऐसी मानसिक क्षमताएं प्रदान करता है जो बाकी मनुष्यों से अलग हैं। यही नहीं, उन्होंने और आगे लिखा–इनमें से सबसे बेहतरीन चीज है मेरा ह्यूमर। इसका एक उदाहरण यह है कि कभी–कभी मेरा मुंह डिनर बोलने से भी मना कर देता है। अब कल्पना कीजिए कि मैं एक सीरियस अदालती फिल्म सेट पर हूं, जहां मेरा डायलॉग है, क्या आप डिनर के लिए घर आना चाहेंगे? लेकिन मेरी जुबान ऑफ हो गई है, इसलिए मैं चतुराई से, दृढ़ता से और बार–बार उसे लंच के लिए आमंत्रित करता हूं। क्योंकि शुक्र है कि लंच अभी भी ऑन है। यह सब मेरे निर्देशक की हैरानी के बीच हो रहा है, बेचारा, जो अंततः इस बेतुकी स्थिति को समझने की कोशिश करना छोड़ देता है, और शायद इसे किसी अजीब संयोग का नतीजा मानकर आगे बढ़ जाता है। फिलहाल यह साफ नहीं है कि यह कोई गंभीर बीमारी है या अस्थायी शारीरिक समस्या। लेकिन इतना जरूर है कि ऋतिक रोशन अपनी स्थिति को सकारात्मक सोच और ह्यूमर के साथ संभालने की कोशिश कर रहे हैं।

मलयालम फिल्म 'लोका 2' की स्क्रिप्ट पर कल्याणी प्रियदर्शन ने दिया बड़ा अपडेट

पिछले साल मलयालम फिल्म 'लोका चौप्टर 1' ने दर्शकों को हैरान किया। फिल्म की कहानी वुमन सुपरहीरो चंद्रा पर थी। बॉक्स ऑफिस पर भी इसने कमाल का कलेक्शन किया। अब इसका दूसरा पार्ट भी बनने वाला है। फिल्म को लेकर लीड एक्ट्रेस कल्याणी प्रियदर्शन ने अपडेट दिया है। हाल ही में एक इवेंट में कल्याणी प्रियदर्शन शामिल हुईं। इस दौरान ही एक्ट्रेस ने 'लोका 2' को लेकर बात की। वह कहती हैं, 'फिल्म 'लोका 2' की स्क्रिप्ट पर काम चल रहा है। उम्मीद है कि शूटिंग सितंबर से शुरू होगी। मैं फिल्म का हिस्सा हूं। आप फिल्म का इंतजार करें। मलयालम फिल्म 'लोका' एक वुमन सुपरहीरो की कहानी थी। इसमें चंद्रा नाम की एक लड़की है, जिसमें पास कुछ सुपरपावर होती हैं। वह बेंगलुरु में रहने आती है और असहाय पुरुष और महिलाओं को मुश्किलों से बचाती है। वह उड़ सकती है, उसके पास लड़ने की असीम क्षमता, ताकत है। इस फिल्म का एक्शन, ड्रामा दर्शकों को पसंद आया है। इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर भी अच्छाई कमाई की थी। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार फिल्म 'लोका' का बजट 33 करोड़ रुपये है। इस फिल्म ने भारतीय बॉक्स ऑफिस पर ग्रास 183.96 करोड़ रुपये कमाए थे। इस फिल्म को कई एक्ट्रेस से सराहा। इस पहली वुमन सुपरहीरो मूवी कहा।

सुबह उठने के बाद थकान और कमजोरी दूर करने के लिए अपनाएं ये इंस्टेंट एनर्जी टिप्स

कई लोगों को सुबह के समय थकान और कमजोरी का अनुभव होता है। जिसकी एक वजह यह भी है कि वह वर्कआउट के लिए भी जरा भी समय नहीं निकालते हैं। जिस वजह से तनाव बना रहता है। किसी भी तरह की बीमारी नहीं होने के बाद भी लोगों में थकान और कमजोरी की समस्या ज्यादा रहती है। ऐसे में अगर आपको भी सुबह उठने के साथ ही कमजोरी व थकान महसूस होती है, तो नीचे बताए गए टिप्स को अपनाने से आपको कुछ हद तक राहत मिल सकती है।

मेडिटेशन

सुबह मेडिटेशन के लिए आधे घंटे का समय जरूर निकालना चाहिए। मेडिटेशन करने से तनाव काफी हद तक कम होगा। वहीं जब आप मेंटली रिलैक्स होंगे, तो तनाव की स्थिति में भी राहत मिलेगी। कई बार अनहेल्दी स्लीप पैटर्न की वजह से भी थकान महसूस होती है। ऐसे में मेडिटेशन से आपको काफी राहत मिल सकती है।

स्ट्रेचिंग

अगर सुबह उठने के साथ ही शरीर में अकड़न महसूस होती है, तो आप कुछ आसान योगासन व स्ट्रेचिंग एक्सरसाइज कर सकते हैं। इससे आपको काफी हद तक राहत मिल सकती है। बता दें कि स्ट्रेचिंग करने से शरीर की मांसपेशियां खुलती हैं। आप सुबह के समय जुम्बा कर सकते हैं। जुम्बा करने से आपको म्यूजिक और वर्कआउट दोनों के फायदे मिलते हैं।

वॉकिंग

रोजाना सुबह के समय आधे घंटे की वॉक से भी आपको काफी फायदा हो सकता है। क्योंकि ताजी हवा न सिर्फ आपके मूड को रिफ्रेश करती है, बल्कि यह पूरे दिन आपको तरोताजा रखने में भी मदद करती है। वॉक करना सेहत के लिहाज से भी काफी अच्छा होता है।

मसाज

शरीर को मसाज से भी काफी आराम मिलता है। इससे आप काफी हद तक रिलैक्स महसूस करते हैं। गुनगुने तेल से मालिश करने से मांसपेशियों को रिलैक्स मिलता है। अगर आप रात के समय पैरों के तलवे पर गुनगुना तेल लगाकर सोते हैं तो आपको बहुत आराम मिलेगा। सुबह के समय गुनगुने पानी से नहाना भी काफी रिलैक्सफुल रहता है।

डाइट

थकान और कमजोरी जैसी समस्या से बचने के लिए प्रॉपर डाइट लेनी चाहिए। क्योंकि प्रॉपर डाइट न लेने से भी आपको इस तरह की समस्या हो सकती है। इसलिए ब्रेकफास्ट को स्किप नहीं करना चाहिए। हेल्दी स्नैक्स व फ्रूट्स लें।

चैन की नींद, अच्छा खाना-पीना...घर से काम करना हमें स्वस्थ और खुश बनाता है

हममें से कुछ लोग एक ऐसी दुनिया की कल्पना किया करते थे, जहां सुबह सुबह अपने शयनकक्ष से बस थोड़ी दूर ही जाना हो, ड्रेस कोड में आरामदायक चप्पलें शामिल हों, और निकटतम कॉफी शॉप रसोई हो। फिर, कोविड महामारी के दौरान घर से काम करना कई लोगों के लिए एक वास्तविकता बन गया, जिसने हमारे कार्य–जीवन संतुलन को नया आकार दिया। 2020 में महामारी के शुरुआती दिनों के दौरान, लोगों की जीवनशैली को लेकर अध्ययन किया गया।

घर पर अधिक सोते हैं लोग

प्रारंभिक कोविड अवधि के दौरान निष्कर्षों से पता चला कि घर से काम करने वाले लोग लगभग आधे घंटे अधिक सोते थे और थोड़ी अधिक शराब पीते थे। आहार संबंधी आदतें और मानसिक स्वास्थ्य संकेतक अपरिवर्तित थे। आज की बात करें तो कई कर्मचारी अभी भी घर से काम करते हैं और कई करना चाहते हैं। फेयर वर्क कमीशन इस बात की समीक्षा कर रहा है कि क्या उसे लचीलेपन के लिए बुनियादी अधिकार बनाने की जरूरत है, जिससे लोगों को घर से काम करने की अनुमति मिल सके। जबकि घर से काम करने के बारे में कुछ स्वास्थ्य प्रमाण मिश्रित हैं, कुल मिलाकर यह दर्शाता है कि श्रमिकों को घर से काम करने का विकल्प चुनने की छूट देना उनके शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए अच्छा हो सकता है। इससे आवागमन में लगने वाले समय की बचत होती है महामारी से पहले, सामान्य ऑस्ट्रेलियाई हर सप्ताह यात्रा में 4.5 घंटे बिताते थे, यह खराब मानसिक स्वास्थ्य और हम अपने स्वयं के स्वास्थ्य को कैसे आंकते हैं, इसके कम स्कोर से जुड़ा हुआ है।

अपने आप को दे पाते हैं वक्त

ऑस्ट्रेलिया में, घर से काम करने के बदलाव ने प्रति सप्ताह लगभग एक घंटा और 18 मिनट का अतिरिक्त समय दिया है। फिर भी, दिलचस्प बात यह है कि इस नए समय का 43ः अधिक काम में खर्च किया जाता है, जिसमें एक अंश (9ः) देखभाल संबंधी गतिविधियों और अवकाश गतिविधियों (33ः) में खर्च किया जाता है। घर से काम करते समय हम ज्यादा हिलते–डुलते हैं और कुछ–कुछ खाते रहते हैं घर से काम करते समय आराम के लिए समर्पित अतिरिक्त समय के साथ, शारीरिक रूप से सक्रिय होने और चलते–फिरते रहने का अधिक अवसर मिलता है। अमेरिका में 108,000 लोगों पर किए गए एक अध्ययन में, घर से काम करने के दिनों में पैदल चलना या साइकिल चलाना अधिक शामिल होने की संभावना अधिक थी। अधिक समय उपलब्ध होने से, धीमी लेकिन सक्रिय परिवहन विकल्प छोटी यात्राओं के लिए व्यवहार्य हो जाते हैं, जैसे सुपरमार्केट तक साइकिल चलाना या बच्चों को देखभाल केन्द्र से लेने के लिए पैदल चलना।

खाने– पीने पर रहता है ध्यान

घर से काम करने के साथ–साथ खान–पान की आदतें भी विकसित हो रही हैं। हालांकि, जैसे–जैसे हम अधिक नाश्ता करते हैं और घर पर हमारे समग्र ऊर्जा उपभोग में वृद्धि देखते हैं, स्वास्थ्यवर्धक भोजन विकल्पों के व्यापक चयन की ओर भी ध्यान देने योग्य बदलाव होता है। सब्जियों, फलों और डेयरी की खपत बढ़ गई है, साथ ही घर पर भोजन तैयार करने में भी वृद्धि हुई है। कार्यालय में, सामुदायिक फ्रिज की बाधाओं या माइक्रोवेव का उपयोग करने की प्रतीक्षा से सीमित, कम पौष्टिक लेकिन जल्दी ले जाने वाला पैक्ड दोपहर का भोजन अक्सर बेहतर विकल्प लगता है।

मानसिक स्वास्थ्य और खुशहाली के बारे में क्या?

मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण पर विचार करते समय, परिणाम सूक्ष्म होते हैं। आम तौर पर, जब घर से काम करना अनिवार्य होता है, जैसा कि शुरुआती महामारी लॉकडाउन के दौरान आम था, मानसिक स्वास्थ्य और भलाई में गिरावट आती है। इसके विपरीत, जब लोग घर से काम करना चुनते हैं, तो उनके मानसिक स्वास्थ्य और खुशहाली में अक्सर सुधार होता है। यह विशेष रूप से तब होता है जब उन्हें सहकर्मियों और उनके संगठन द्वारा अच्छी तरह से समर्थन प्राप्त होता है, और वे अपने अलगाव के स्तर का प्रबंधन कर सकते हैं, जिसका अर्थ है कि उनके पास घर से काम करने की व्यवस्था में लचीलापन है। ऐसी चिंताएं हैं कि घर से काम करने से टीम के सामंजस्य और सहयोग, कार्यस्थल के भीतर लगाव की भावना और सामाजिक संबंधों और पदोन्नति के अवसरों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। जबकि सहकर्मियों के साथ संपर्क को दूर से दोहराना मुश्किल है, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि नौकरी का प्रदर्शन और उत्पादकता स्थिर दिखाई देती है या, ज्यादातर मामलों में, घर से काम करने पर बेहतर होती है।

महिलाओं के स्वास्थ्य में आया सुधार

इसके अतिरिक्त, घर पर या हाइब्रिड मॉडल में पूर्णकालिक काम करने वाले लोग नौकरी से संतुष्टि और भलाई स्थिर या बेहतर होने की रिपोर्ट करते हैं। वे कार्य–परिवार संघर्ष में कमी की भी रिपोर्ट करते हैं–यह विशेष रूप से महिलाओं के लिए है। कुछ लोगों को दूसरों की तुलना में अधिक लचीलेपन की आवश्यकता होती है कुछ लोगों के लिए, घर से काम करने का लचीलापन काम करने में कुछ संरचनात्मक बाधाओं को कम करता है। महिलाएं, विशेष रूप से माताएं और देखभाल करने वाले, घर से काम करने के विकल्प के साथ बेहतर स्वास्थ्य की रिपोर्ट करते हैं। अतिरिक्त लचीलापन भुगतान किए गए रोजगार को अवैतनिक देखभाल और घरेलू कर्तव्यों के साथ संतुलित करने में मदद करता है, जो महिलाओं के कंधों पर असंगत रूप से पड़ता है।

विकलांग लोगों को मिला फायदा

इसी तरह, विकलांग श्रमिक पारंपरिक कार्यस्थलों द्वारा उत्पन्न परिवहन और पहुंच संबंधी चुनौतियों पर काबू पाने के समाधान के रूप में घर से काम करने का पक्ष लेते हैं। वैकल्पिक कार्य व्यवस्था प्रदान करने से बड़ी संख्या में विकलांग लोगों को भुगतान वाले रोजगार में संलग्न होने में मदद मिलती है, जो मानसिक स्वास्थ्य में सुधार से जुड़ा हुआ है। घर से काम करना सभी के लिए एक जैसा दृष्टिकोण नहीं है और बेहतर, अधिक समावेशी और लचीले कार्य वातावरण का समर्थन करने के लिए कई लोगों के बीच एक विकल्प के रूप में सबसे अच्छी स्थिति में है। जिस तरह हमारे घर रातोंरात अस्थायी कार्यालयों में बदल गए, उसी तरह काम के प्रति हमारा दृष्टिकोण भी विकसित होना चाहिए, जिसमें जरूरतों और जीवनशैली की विविधता को अपनाना चाहिए। आइए आशा करें कि कोविड की विरासत एक स्वस्थ, अधिक संतुलित कार्यबल होगी।

मोटापे को छिपाने और लंबी हाइट के लिए इस तरह से पहनें साड़ी, बहुत काम आएंगे ये हैक्स

हर लड़की पर साड़ी काफी अच्छी लगती है। लेकिन अगर साड़ी को सलीके से पहना गया हो। हांलाकि ज्यादातर लड़कियां चाहकर भी साड़ी नहीं पहन पाती हैं। क्योंकि उन्हें ऐसा लगता है कि साड़ी में उनकी हाइट काफी कम लगती है और मोटा लुक आता है। लड़कियों को ऐसा लगता है कि साड़ी उनपर अच्छी नहीं लगेगी। इस कारण वह साड़ी पहनने में हिचकती हैं। अक्सर लड़कियों की यह शिकायक होती है कि साड़ी में उनकी हाइट कम हो जाती है। तो आज हम आपको साड़ी पहनने के कुछ आसान स्टाइलिंग टिप्स के बारे में बताने जा रहे हैं। इन आसान टिप्स को फॉलो करने से साड़ी में आपकी हाइट लंबी दिखेगी।

नाभि के ऊपर से न पहनें साड़ी

साड़ी पहनने के दौरान ध्यान रखना चाहिए कि आप नाभि से थोड़ा नीचे साड़ी पहनें। नाभि के ऊपर साड़ी पहनने से आपका लुक मोटा दिख सकता है। वहीं कमर के नीचे का हिस्सा सभी का बराबर होता है। साड़ी पहनते समय यह आसान सा ट्रिक आपके लुक को पतला दिखाने में सहायता करता है।

वर्टिकल लाइन डिजाइन वाली साड़ी

साड़ी में ज्यादा लंबा दिखने के लिए ऐसी साड़ियां पहनें, जिसमें ऊपर से नीचे की तरफ लंबी धारी वाली डिजाइन हों। इस तरह की साड़ी में आपकी हाइट ज्यादा लगेगी। चौड़ाई में बनी डिजाइन वाली साड़ी पहनने से बचना चाहिए। क्योंकि इस तरह की साड़ी में हाइट कम लगती है।

साड़ी का प्रिंट्स

आपकी बॉडी शेप के हिसाब से साड़ी के प्रिंट्स होने चाहिए। आप चाहें तो फ्लोरल प्रिंट या फिर छोटे प्रिंट वाली साड़ी पहन सकती हैं। क्योंकि इस तरह की साड़ियों में आपकी लंबाई ज्यादा लगने के साथ ही वजन भी कम लगेगा। यह प्रिंट देखने में भी काफी स्टाइलिश लगते हैं।

ब्लाउज डिजाइन

अगर आपकी हाइट कम है और साड़ी में लंबी दिखना चाहती हैं, तो आपको लंबे या फुल स्लीव्स वाले ब्लाउज नहीं पहनने चाहिए। आप साड़ी में लंबी दिखने के लिए बिना स्लीव्स वाले या फिर कोहनी के ऊपर वाले ब्लाउज पहनें। वहीं बाजुओं में अधिक चर्बी या मोटापा होने पर आपको हाफ स्लीव्स या कट स्लीव्स वाले ब्लाउज नहीं पहनने चाहिए।

इन लोगों को नहीं खानी चाहिए इलायची, फायदे की जगह होगा नुकसान

अपने स्वाद के लिए जानी जाने वाली हरी इलायची स्वास्थ्य के लिए भी बेहद लाभकारी मानी जाती है। इसका इस्तेमाल एक नैचुरल मॉइश्चराइजर के तौर पर किया जाता है जो सांसों की दुर्गंध दूर करती है। इसके अलावा इसमें ऐसे कई सारे औषधीय गुण पाए जाते हैं जो हेल्थ प्रॉब्लम्स से छुटकारा दिलवाने में मदद करते हैं। लेकिन कुछ लोगों को लिए इसका सेवन करना नुकसानदायक हो सकता है। तो चलिए आज आपको इस आर्टिकल के जरिए बताते हैं किन लोगों को इलायची नहीं खानी चाहिए।

सांस से जुड़ी समस्याओं में

यदि आपको सांस से जुड़ी समस्या है उन्हें इलायची का सेवन नहीं करना चाहिए। ऐसे लोगों को इलायची खाने से नुकसान हो सकता है। ऐसे में यदि अस्थमा या किसी भी तरह की सांस संबंधी परेशानी से जूझ रहे हैं तो इसका सेवन न करें।

एलर्जी में

अगर आप किसी तरह की एलर्जी से जूझ रहे हैं तो भी इसका सेवन न करें। इलायची में पाए जाने वाले गुण रैशेज और खुजली की समस्या बढ़ा सकते हैं। इसका सेवन करने से गले में सूजन बढ़ सकती है और आपको सांस लेने में भी दिक्कत हो सकती है।

प्रेग्नेंट महिलाएं

एक्सपर्ट्स की मानें तो प्रेग्नेंट महिलाओं को इलायची का ज्यादा मात्रा में सेवन नहीं करना चाहिए। इस दौरान इसका सेवन करने से गर्भपात का खतरा रहता है क्योंकि इलायची की तासीर गर्म होती है। परंतु यदि फिर भी प्रेग्नेंट महिलाएं इलायची खाना चाहती हैं तो एक बार डॉक्टर की सलाह जरुर ले लें।

मितली आने पर

ऐसे लोग जिन्हें मितली की समस्या होती हैं उन्हें ज्यादा मात्रा में इलायची खाने से उल्टी और मितली की समस्या हो सकती है। इसके अलावा यदि आपका पेट ठीक नहीं रहता तो भी ज्यादा मात्रा में इलायची का सेवन न करें।

खांसी होने पर

यदि आपको खांसी है तो भी इसका सेवन न करें। खांसी के दौरान इलायची खाने से आपकी समस्या और भी ज्यादा बढ़ सकती है।

संक्षिप्त

अश्विन ने पाकिस्तान के जख्मों पर नमक छिड़का, बोले- 175 ही काफी था फॉलो-ऑन के लिए

चेन्नई,एजेंसी। टी20 विश्व कप 2026 में भारत ने पाकिस्तान को 61 रन से हराकर ग्रुप चरण में अपनी स्थिति मजबूत कर ली। कोलंबो के प्रेमदासा में खेले गए इस मुकाबले में भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 175 रन बनाए। पाकिस्तान लक्ष्य का पीछा करते हुए 114 रन पर सिमट गया। भारत की जीत में ईशान किशन की 77 रन की पारी निर्णायक रही। अब पाकिस्तान के जख्मों पर भारत के पूर्व स्पिनर रविचंद्रन अश्विन ने नमक छिड़का है। उन्होंने कहा है कि 175 रन पाकिस्तान को दूसरी बार खिलाने के लिए काफी थे। भारत से हार के बाद पड़ोसी देश का लगातार मजाक बन रहा है। पूर्व भारतीय स्पिनर रविचंद्रन अश्विन ने पाकिस्तान की हार पर तीखी टिप्पणी की। उन्होंने कहा, ₹175 इस पिच पर 250 के बराबर है। 175 कम स्कोर नहीं है। इस पिच पर तो फॉलो–ऑन भी लागू किया जा सकता है। चार दिन के मैच में 150 रन और पांच दिन के मैच में 200 रन की बढ़त पर फॉलो–ऑन होता है। टी20 में यह स्कोर पूरी तरह पर्याप्त था। अगर भारत 20 रन और बना लेता, तो हम फॉलो–ऑन करा सकते थे।श अश्विन का यह बयान सोशल मीडिया पर काफी चर्चा में रहा। अश्विन ने टॉस को भी मैच का निर्णायक क्षण बताया। उन्होंने कहा, पाकिस्तान ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया, वहीं से मैच हाथ से निकल गया। इस विश्व कप में 10 ओवर में 100 रन का पीछा करना आसान नहीं है। प्रेमदासा स्टेडियम में लक्ष्य का पीछा करना बेहद मुश्किल है। उन्होंने आगे कहा, दबाव झेलने के मामले में भारत पाकिस्तान से 100 गुना बेहतर है। पाकिस्तान अभी उस स्तर पर नहीं है। अश्विन ने कप्तान सलमान आगा और कोच माइक हेसन की रणनीति पर भी सवाल उठाए। उन्होंने खासतौर पर शाहीन अफरीदी को पावरप्ले में जल्दी लाने के फैसले को गलती बताया। अश्विन ने कहा, हमने पहले ही बताया था कि ईशान किशन बाएं हाथ के तेज गेंदबाजों के खिलाफ खतरनाक हैं। आंकड़े सच बताते हैं। अगर शाहीन मार खा रहे थे, तो उन्हें एंगल बदलकर राउंड द विकेट आना चाहिए था। ऐसा नहीं हुआ। दूसरे ओवर में सैम अयूब को गेंदबाजी करनी चाहिए थी। अश्विन ने माना कि सलमान आगा और माइक हेसन के नेतृत्व में पाकिस्तान सामरिक रूप से बेहतर हुआ है, लेकिन भारत के खिलाफ फैसलों में चूक भारी पड़ी। उनके मुताबिक, मैच–अप और आंकड़ों को सही तरीके से लागू न करना हार की बड़ी वजह बना।

भारत में तेजी से बढ़ रहा सॉफ्टवेयर-फर्स्ट कारों का क्रेज, 95प्रतिशत खरीदार ज्यादा पैसे देने को तैयार

नई दिल्ली,एजेंसी। भारत का ऑटोमोबाइल सेक्टर तेजी से सॉफ्टवेयर–फर्स्ट भविष्य की ओर बढ़ रहा है। सॉफ्टवेयर फर्स्ट किसी गाड़ी के डिजाइन और विकास में हार्डवेयर से पहले उसके सॉफ्टवेयर (ओएस, एप्स, फीचर्स) को प्राथमिकता देता है। इसका मतलब ये है कि ग्राहक अब सिर्फ माइलेज या इंजन देख कर कार नहीं लेते बल्कि वो ये भी देखते हैं कि ये कितनी स्मार्ट है? 2026 डेलॉयट ग्लोबल ऑटोमोटिव कंज्यूमर स्टडी के अनुसार, भारत एक सॉफ्टवेयर–फर्स्ट भविष्य की ओर बढ़ रहा है। अब डिजिटल फीचर्स ही कार की पहचान बन रहे हैं। अध्ययन के अनुसार भारत में 95 प्रतिशत ग्राहक अपनी गाड़ियों में सेफ्टी, सिक्योरिटी और वाहन की स्थिति की जानकारी देने वाली तकनीक के लिए अधिक दाम देने के लिए तैयार हैं। यूजर्स का ये बदलता व्यवहार सॉफ्टवेयर डिफाइंड व्हीकल की ओर इशारा करता है। रिपोर्ट की मानें तो भारतीय ग्राहकों की सोच में बड़ा बदलाव आया है। अब वाहन का मूल्य केवल मैकेनिकल क्षमता से नहीं बल्कि कनेक्टेड फीचर्स, सॉफ्टवेयर अपडेट और डिजिटस, सेवाओं से तय होती हैं। भारत में 95 प्रतिशत खरीदार इन कार फीचर्स जैसे– सुरक्षा, सुरक्षा और गाड़ी की हेल्थ रिपोर्ट के लिए ज्यादा भुगतान करने के लिए तैयार हैं। ये एक सॉफ्टवेयर–डिफाइंड व्हीकल युग की शुरुआत है जहां एक कार मैकेनिकल मशीन से ज्यादा एक स्मार्ट डिवाइस है। रिपोर्ट के कुछ मुख्य आंकड़े इस प्रकार हैं–

81प्रतिशत ग्राहक मानते हैं कि सॉफ्टवेयर–आधारित कारें उनके लिए बहुत मददगार हैं।

84प्रतिशत भारतीय ग्राहक अपनी कारों में एआई–आधारित कस्टमाइजेशन के पक्ष में हैं।

70प्रतिशत लोग बेहतर तकनीक मिलने पर अपनी मौजूदा कार ब्रांड को बदलने के लिए तैयार हैं।

सुरक्षा और डाटा प्राइवेसीरू एक बड़ी चुनौती

इस बदलाव में सुरक्षा सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। भारतीय ग्राहक आज भी कार खरीदते समय सुरक्षा को सबसे ऊपर रखते हैं। ज्यादातर ग्राहक सुरक्षा से जुड़े फीचर्स को ज्यादा प्राथमिकता देते हैं। हालांकि एक खतरा डाटा प्राइवेसी को लेकर भी है। कनेक्टेक कारों में डाटा चोरी का खतरा भी बढ़ा है। आंकड़े कुछ इस प्रकार हैं–

72प्रतिशत खरीदारों को अपनी लोकेशन शेयर करने में असुरक्षा महसूस होती है।

इस डाटा से स्पष्ट होता है कि जैसे–जैसे कारें स्मार्ट होंगी, कंपनियों को डाटा पारदर्शिता और सुरक्षा पर ज्यादा काम करने की जरूरत पड़ेगी।

67 साल में पहली बार फाइनल में जम्मू-कश्मीर, पर आसान नहीं रहा है सफर, इन चुनौतियों का किया सामना

नई दिल्ली,एजेंसी। जम्मू कश्मीर ने बुधवार को पश्चिम बंगाल के कल्याणी में खेले गए रणजी ट्रॉफी सेमीफाइनल के चौथे दिन दो बार के पूर्व चौंपियन बंगाल को छह विकेट से करारी शिकस्त दी। साथ ही टीम ने 67 साल के अपने रणजी ट्रॉफी इतिहास में पहली बार फाइनल में पहुंचकर इतिहास रच दिया। बंगाल ने जम्मू कश्मीर के सामने 126 रन का लक्ष्य रखा था। जम्मू कश्मीर में 34.4 ओवर में चार विकेट खोकर यह लक्ष्य हासिल कर दिया। उसकी तरफ से वंशज शर्मा ने नाबाद 43 और अब्दुल समद ने नाबाद 30 रन बनाए। इससे पहले तेज गेंदबाज आकिब नबी ने मैच में नौ विकेट (पहली पारी में पांच और दूसरी पारी में चार विकेट) लेकर बंगाल की जीत की संभावनाओं को पूरी तरह से खत्म कर दिया था।

बीसीसीआई के अध्यक्ष मिथुन मनहास जब 2021 में जम्मू कश्मीर क्रिकेट संघ (जेकेसीए) के प्रबंधन से जुड़े तो उन्हें एक ऐसी संस्था में चीजों को ठीक करना पड़ा जो कुप्रबंधन और भ्रष्टाचार के आरोपों से जूझ रहा थी।मनहास ने कहा, जब मैंने प्रशासक का पद संभाला था, तब यह इतना आसान नहीं था। बीसीसीआई के तत्कालीन सचिव जय शाह ने मुझे पूरी छूट दी थी और कहा था कि जम्मू कश्मीर की क्रिकेट को पटरी पर लाने के लिए जो भी जरूरी हो, वह करो। मनहास ने कहा, श्मैं टीवी पर मैच देख रहा था। मोहम्मद शमी और आकाश दीप जैसे खिलाड़ियों वाली बंगाल की टीम को हराना बहुत बड़ी उपलब्धि है। मेरे अंदर का क्रिकेटर भावुक है क्योंकि मैंने अपना प्रथम श्रेणी का करियर वहीं समाप्त किया और राज्य इकाई के साथ भी काम किया।

जम्मू कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने इस केंद्र शासित प्रदेश की क्रिकेट टीम के पहली बार रणजी ट्रॉफी के फाइनल में पहुंचने को उल्लेखनीय उपलब्धि करार देते हुए बुधवार को खिलाड़ियों को बधाई दी। उमर ने जम्मू कश्मीर की जनता की तरफ से भी टीम को बधाई दी और विश्वास व्यक्त किया कि इस क्षेत्र के क्रिकेटर जल्द ही अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाएंगे। उन्होंने पत्रकारों से कहा, मैं अपनी तरफ से और जम्मू कश्मीर के लोगों की तरफ से हमारी क्रिकेट टीम को हार्दिक बधाई देता हूं। मुझे

उम्मीद है कि वह दिन दूर नहीं जब हम जम्मू कश्मीर के खिलाड़ियों को राष्ट्रीय टीम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए देखेंगे। उन्होंने कहा कि पिछले कुछ वर्षों में टीम की प्रगति निरंतर कड़ी मेहनत, अनुशासन, कोचिंग और सहायक स्टाफ के मार्गदर्शन को दर्शाती है।

आकिब नबी के शानदार प्रदर्शन और आईपीएल स्टार अब्दुल समद की बेखौफ बल्लेबाजी ने यह सुनिश्चित किया कि जिस टीम को कभी लगातार अच्छा प्रदर्शन नहीं करने वाली टीम के रूप में जाना जाता था वह अब खिताब से सिर्फ एक कदम दूर है। समद ने 22 वर्षीय वंशज को विजयी रन बनाने का मौका दिया और इस युवा बल्लेबाज ने मुकेश कुमार की गेंद पर लॉन्ग ऑन के ऊपर से छक्का मारकर जम्मू कश्मीर की टीम में जबरदस्त जश्न का माहौल बना दिया। जम्मू कश्मीर ने पहली बार 1959–60 के सत्र में रणजी ट्रॉफी में हिस्सा लिया था और तब से लेकर अब तक उसे मजबूत दावेदार नहीं माना जाता था। जम्मू कश्मीर ने इस सत्र से पहले 334 रणजी मैच खेले थे, जिनमें से उसने केवल 45 जीते थे। उसे अपनी पहली जीत दर्ज करने में 44 साल लग गए, जो उसने 1982–83 में सेना के खिलाफ हासिल की थी। उसके लिए नॉकआउट में पहुंचना कभी आसान नहीं रहा लेकिन 2013–14 में उसे एक बड़ी सफलता मिली जब उसने नेट रन रेट के आधार पर गोवा को पीछे छोड़कर क्वार्टर फाइनल में जगह बनाई। उसने 2015–16 में परवेज रसूल की कप्तानी में वानखेड़े स्टेडियम में मुंबई को हराकर अपनी सबसे बड़ी जीत दर्ज की थी, लेकिन दशकों तक जम्मू कश्मीर के प्रदर्शन में निरंतरता की कमी रही, लेकिन इस सत्र में कोच अजय शर्मा और कप्तान पारस डोगरा के नेतृत्व में उसने अपने विश्वास को परिणामों में तब्दील कर दिया। मुंबई के खिलाफ शुरुआती हार के बाद जम्मू कश्मीर ने राजस्थान के खिलाफ पारी की जीत, दिल्ली और हैदराबाद के खिलाफ महत्वपूर्ण जीत हासिल करके नॉकआउट में प्रवेश किया। उसने क्वार्टर फाइनल में मध्य प्रदेश को 56 रन से हराकर पहली बार सेमीफाइनल में प्रवेश किया। इस मैच में नबी ने 110 रन देकर 12 विकेट लिए थे। जम्मू कश्मीर की टीम में जहां कोई स्टार खिलाड़ी नहीं था वहीं बंगाल की टीम में मोहम्मद शमी, आकाश दीप, मुकेश कुमार और शाहबाज अहमद जैसे चार भारतीय अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी और भारत ए के स्टार बल्लेबाज अभिमन्यु ईश्वरन शामिल थे। इसके अलावा बंगाल को घरेलू मैदान पर खेलने का फायदा भी मिलना था लेकिन जम्मू कश्मीर ने उसे इससे वंचित कर दिया। जम्मू कश्मीर में मंगलवार को तीसरे के दिन का खेल समाप्त होने तक दो विकेट पर 43 रन बनाए थे। उसने चौथे दिन की शुरुआत में ही कल के अविजित बल्लेबाज शुभम पुंडीर (27) और कप्तान पारस डोगरा (09) के विकेट गंवा दिए, लेकिन वंशज और समद ने बंगाल के गेंदबाजों को कोई मौका नहीं दिया और 55 रन की अटूट साझेदारी करके अपनी टीम को ऐतिहासिक जीत दिलाई। बंगाल ने अपनी पहली पारी में 328 रन बनाए थे जिसके जवाब में जम्मू कश्मीर ने 302 रन बनाए।

अदिति हुंडिया से शादी करेंगे ईशान किशन ? अटकलों पर मां सुचित्रा देवी का बयान

मुंबई,एजेंसी। टी20 विश्वकप 2026 में पाकिस्तान के खिलाफ तूफानी पारी खेलकर प्लेयर ऑफ द मैच अवॉर्ड जीतने वाले ईशान किशन इन दिनों अलग वजह से चर्चा में हैं। वजह है उनके और अदिति हुंडिया के रिलेशनशिप की अटकलें। वैसे तो रूमर्स काफी पहले से चल रहे थे कि ईशान और अदिति रिलेशनशिप में हैं, लेकिन हाल फिलहाल में इस बात की पुष्टि हुई है। ऐसे में अब चर्चा इस बात की शुरू हो चुकी है कि क्यों दोनों शादी करेंगे। इन अटकलों पर अब ईशान किशन की मां सुचित्रा देवी का बयान आया है। ईशान ने 15 फरवरी को पाकिस्तान के खिलाफ शानदार प्रदर्शन कर सुर्खियां बटोरीं। बाएं हाथ के इस ओपनर ने 40 गेंदों पर 77 रनों की विस्फोटक पारी खेलकर भारत को बड़ी जीत दिलाई। उनकी इस मैच जिताऊ पारी की बदौलत भारत ने 61 रन से मुकाबला अपने नाम किया।

ईशान ने न सिर्फ बल्ले से कमाल दिखाया, बल्कि विकेट के पीछे भी शानदार प्रदर्शन किया। उन्होंने उस्मान खान को स्टंप आउट कर मैच का रुख पूरी तरह भारत की ओर मोड़ दिया। मैच के बाद जहां हर ओर उनकी बल्लेबाजी की चर्चा हो रही थी, वहीं उनके निजी जीवन को लेकर भी खबरें सामने आने लगीं। ईशान के दादा अनुराग पांडेय ने मॉडल अदिति हुंडिया के साथ उनके रिश्ते की पुष्टि कर दी। उन्होंने कहा, श्जो भी ईशान शादी के लिए चुनेगा, हमें पूरी तरह स्वीकार है। अदिति उसकी गर्लफ्रेंड है। वह एक मॉडल है। बच्चों की खुशी को स्वीकार करना चाहिए। दादा के इस बयान के बाद सोशल मीडिया पर ईशान और अदिति की शादी की अटकलें तेज हो गईं।

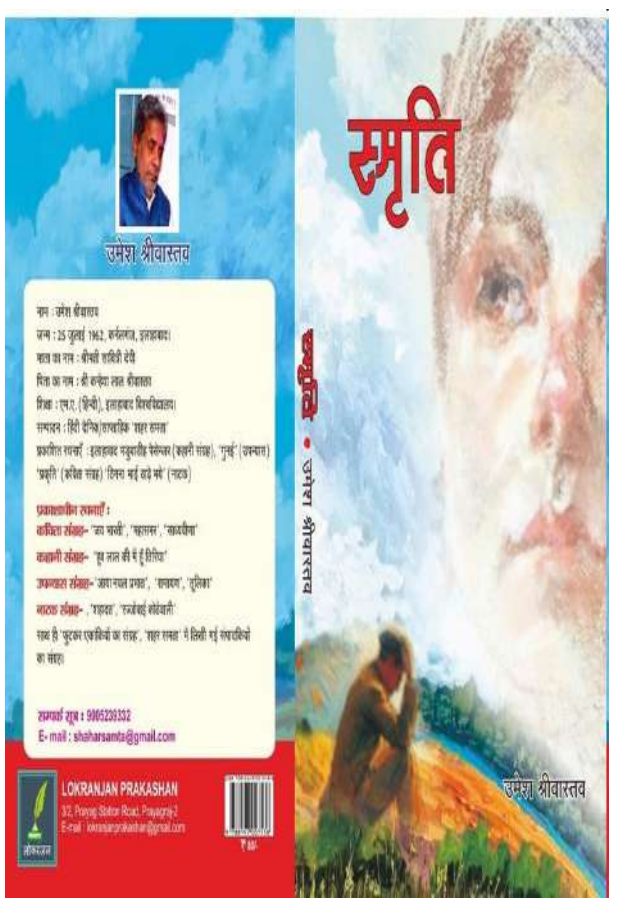

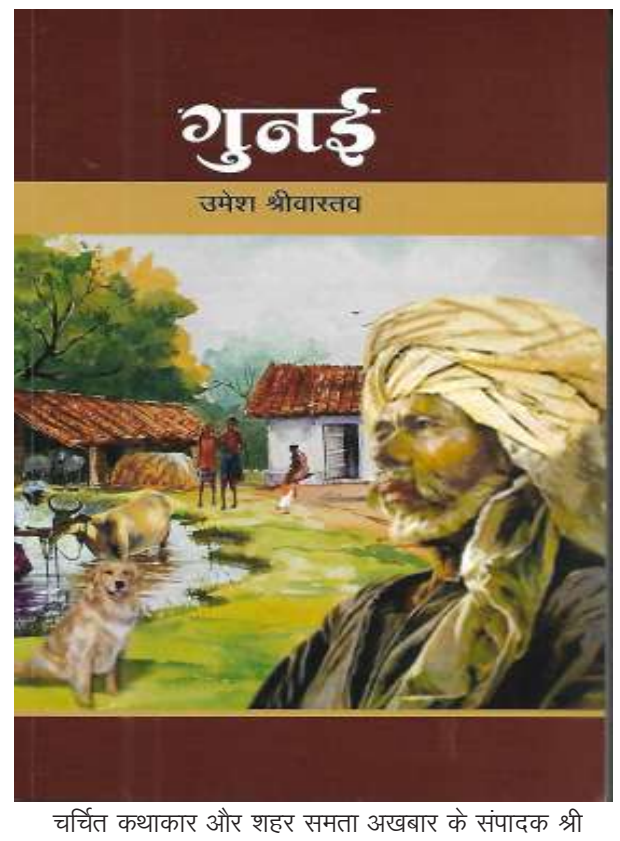

चर्चित कथाकार और शहर समता अखबार के संपादक श्री उमेश श्रीवास्तव जी का ग्रामीण पृष्ठभूमि पर लिखा बहु प्रतीक्षित

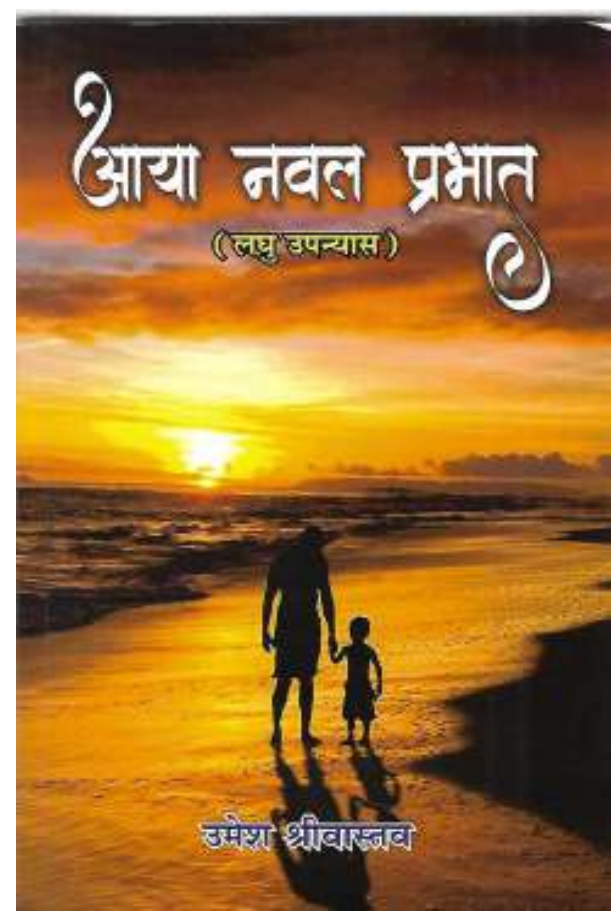

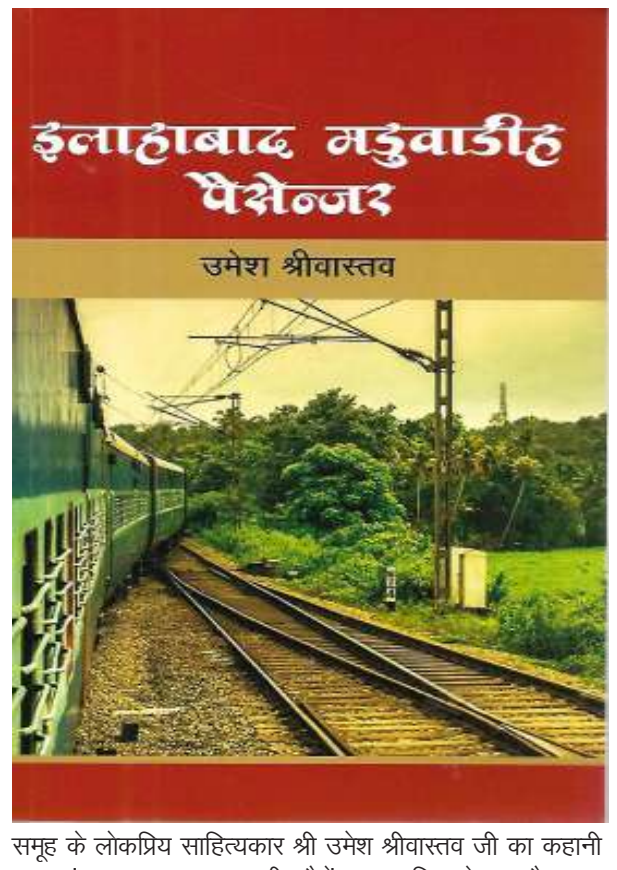

समूह के लोकप्रिय साहित्यकार श्री उमेश श्रीवास्तव जी का कहानी संग्रह इलाहाबाद मडुवाडीह पैसेंजर प्रकाशित हो गया है। उमेश श्रीवास्तव जी को बहुत बधाई एवम शुभकामना।

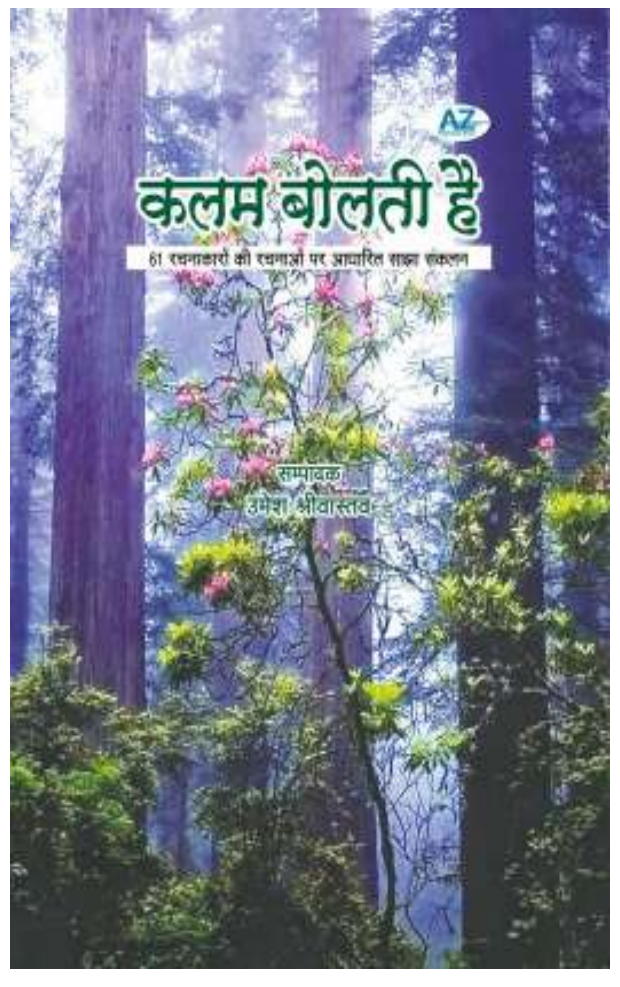

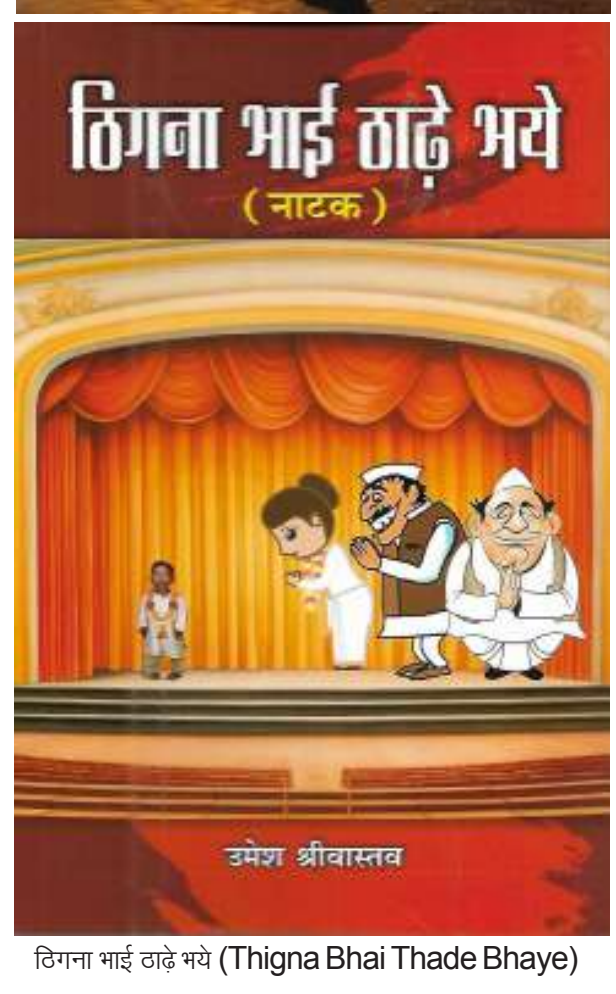

ठिगना भाई ठाढ़े भये (Thigna Bhai Thade Bhaye)

यूएस ने 24 घंटे में पश्चिम एशिया भेजे 50 से ज्यादा लड़ाकू विमानय ईरान की धमकी- ऐसा मारेंगे उठेंगे नहीं

वॉशिंगटन , एजेंसी। अमेरिका और ईरान के बीच तनाव गहराता जा रहा है। पहले खबर आई कि अमेरिका ने अपने दो युद्धपोत पश्चिम एशिया में तैनात किए हैं। जिसके बाद आशंका हुई कि अमेरिका, ईरान के खिलाफ सैन्य कार्रवाई कर सकता है। अब खबर आई है कि अमेरिका ने बीते 24 घंटे में 50 से ज्यादा लड़ाकू विमान पश्चिम एशिया भेजे हैं। इसे अमेरिका द्वारा ईरान के आसपास अपनी नौसैन्य और वायु सेना की तैनाती बढ़ाने के तौर पर देखा जा रहा है। वहीं ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई ने सोशल मीडिया पोस्ट में अमेरिकी सेना को धमकी दी है कि दुनिया की सबसे ताकतवर सेना पर भी ऐसा हमला होगा कि वे दोबारा उठ नहीं पाएंगे। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, अमेरिका सेना के एक अधिकारी ने बताया कि अमेरिका और ईरान के बीच जिनेवा में हो रही बातचीत में प्रगति हुई है, लेकिन अभी भी कई मुद्दों पर विस्तृत चर्चा होनी है। बीते हफ्ते ही अमेरिका ने अपने सबसे बड़े युद्धपोत यूएसएस गेराल्ड आर फोर्ड को पश्चिम एशिया में तैनात किया है। साथ ही यूएसएस अब्राहम लिंकन पहले से ही पश्चिम एशिया में तैनात है। अब 50 से ज्यादा अतिरिक्त लड़ाकू विमान भेजने को अमेरिका द्वारा ईरान पर दबाव बनाने के तौर पर देखा जा रहा है। अमेरिका द्वारा सैन्य तैनाती बढ़ाने के बीच ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्ला अली खामेनेई ने सोशल मीडिया पर साझा एक पोस्ट में अमेरिका को धमकी दी है। खामेनेई ने लिखा, श्अमेरिका द्वारा लगातार कहा जा रहा है उन्होंने ईरान की तरफ युद्धपोत भेजा है। बेशक एक युद्धपोत बेहद खतरनाक होता है, लेकिन उससे भी खतरनाक है वो हथियार, जो युद्धपोत को समुद्र की गहराई में डुबो सकता है। खामेनेई ने ईरान की परमाणु महत्वकांक्षा पर भी अपने विचार रखे। खामेनेई ने लिखा श्यह बात कि परमाणु ऊर्जा हमारा हक है। अंतरराष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी की गाइडलाइंस में भी शामिल है। यानी, सभी देशों को परमाणु और परमाणु संवर्धन रखने का हक है। यह एक देश के हक में से एक है। अमेरिका इसमें दखल क्यों दे रहा है?श

संक्षिप्त

11 साल बाद अमेजन से निकाले गए भारतीय मूल के टेक मैनेजर, बेटी ने दी हिम्मत तो ऐसे की नई शुरुआत

वॉशिंगटन, एजेंसी। हेमंत विरमानी भारतीय मूल के एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर और टेक मैनेजर हैं, जो अमेरिका के वॉशिंगटन में रहते हैं। वे करीब 11.5 साल तक अमेजन में काम कर चुके थे। अक्तूबर 2025 में कंपनी की छंटनी में उनकी नौकरी चली गई, जिससे उनकी कहानी चर्चा में आ गई। हेमंत अमेजन में सीनियर मैनेजर, सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट के पद पर थे। उनकी जिम्मेदारी इंजीनियरिंग टीम को लीड करना और टेक्नोलॉजी की लंबी योजना बनाना थी। उनका काम खास तौर पर दुनिया भर में ऑनलाइन सामान बेचने की तकनीक को बेहतर बनाना था। हेमंत ने बताया कि एक रात अचानक ईमेल आया कि उनकी नौकरी खत्म कर दी गई है। उन्होंने कहा कि अमेजन उनकी जिंदगी का बड़ा हिस्सा बन चुका था, इसलिए यह खबर बहुत कठिन लगी। बता दें कि, हेमंत ने बीआईटीएस पिलानी से सॉफ्टवेयर सिस्टम में मास्टर्स किया और दिल्ली कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग (अब डीटीयू) से इंजीनियरिंग की पढ़ाई की है। उन्होंने बताया कि इस मुश्किल समय में उनकी बेटी ने उन्हें हिम्मत दी और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। वे अब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई)सीख रहे हैं। एक छोटे एआई प्रोजेक्ट पर काम कर रहे हैं ताकि नई स्किल मिल सके। इसके साथ–साथ नई नौकरी के लिए आवेदन कर रहे हैं और नेटवर्क बना रहे हैं। उन्होंने कहा, श्मुझे चिंता तो है, लेकिन हो सकता है यह मुश्किल आगे चलकर मेरे लिए अच्छा मौका साबित हो।

एपस्टीन फाइल्स में 'भारतीय' महिला का जिक्र, क्या यौन अपराधी जेफरी की शिकार बनी थी?

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका के न्याय विभाग (डीओजे) की ओर से हाल में जारी दस्तावेज किए गए हैं, जो यौन अपराधी जेफरी एपस्टीन के मामले से जुड़े हैं। ये दस्तावेज बताते हैं कि अमेरिकी अधिकारियों ने पीड़ित सहायता योजनाओं के

तहत मुआवजा और चिकित्सा सहायता प्रदान करने के लिए कथित तौर पर भारत में मौजूद एक महिला का पता लगाने की कोशिश की थी। ईमेल में संघीय जांच ब्यूरो (एफबीआई) को भेजे गए दस्तावेजों का भी जिक्र किया गया था और यह भी बताया गया था कि पात्र लोगों के लिए आपात पीड़ित सहायता कार्यक्रमों के तहत थेरेप सत्रों के लिए कवरेज उपलब्ध है। ईमेल में दस्तावेज संख्या ईएफटीए00038425 में श्न्यूयॉर्क अपराध पीड़िता के लिए मुआवजे लिंकश का जिक्र है। इसमें लिखा है, कृपया उनसे आवेदन पत्र भरवाकर मुझे भेजें। मैं इसे सीधे एफबीआई के दस्तावेजों के साथ भेज दूंगा। दस्तावेज के एक हिस्सों में यह भी लिखा था– वर्तमान में भारत में रह रही हैं। क्या उनकी मदद के लिए कुछ किया जा सकता है? क्या वे वहां भी छह निशुल्क सत्रों की पात्र होंगी? क्या भारत में कोई संसाधन उपलब्ध कराए जा सकते हैं? ईमेल भेजने वाले का नाम छिपाया गया था। ये रिकॉर्ड तीस जनवरी को अमेरिकी न्याय विभाग की ओर से सार्वजनिक किए दस्तावेजों का हिस्सा थे। अमेरिकी न्याय विभाग की ओर से जारी 30 लाख से अधिक पन्नों के दस्तावेजों में कई राजनेताओं, राजनयिकों, कारोबारियों और शाही परिवार के सदस्यों के नाम सामने आए। इन दस्तावेजों में उनके अमेरिकी कारोबारी और दोषी यौन अपराधी जेफरी एपस्टीन से संबंधों का खुलासा हुआ, जिसके बाद कई लोगों की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचा। जांच शुरू हुई और कुछ लोगों को अपने पद भी छोड़ने पड़े। पूर्व प्रिंस एंड्रयू को छोड़कर बाकी लोगों पर किसी तरह के यौन अपराध का आरोप नहीं है। हालांकि, दोषी यौन अपराधी साबित होने के बाद भी जेफरी एपस्टीन के साथ दोस्ताना संबंध बनाए रखने के कारण कई लोगों को पद से हटना पड़ा। इन दस्तावेजों का आखिरी हिस्सा 30 जनवरी को अमेरिकी न्याय विभाग ने जारी किया।

भारत के विदेश सचिव ने की जमात-ए-इस्लामी के अमीर से मुलाकात, जानें इस बैठक में हुई क्या बातचीत

ढाका, एजेंसी। भारत के विदेश सचिव विक्रम मिस्री ने बांग्लादेश के नए प्रधानमंत्री तारिक रहमान के शपथ ग्रहण समारोह के अवसर पर जमात–ए–इस्लामी के अमीर डॉ. शफीकुर रहमान से शिष्टाचार भेंट की। यह जानकारी बांग्लादेश स्थित भारतीय उच्चायोग ने अपने आधिकारिक फेसबुक पोस्ट में दी। विदेश सचिव ने डॉ. रहमान को उनके नए दायित्व के लिए शुभकामनाएं दीं और बांग्लादेश के प्रति भारत के निरंतर समर्थन को दोहराया। उन्होंने दोनों देशों के संबंधों को जन–केंद्रित बताते हुए सहयोग को आगे बढ़ाने की प्रतिबद्धता जताई। डॉ. शफीकुर रहमान ने भी दोनों देशों के बीच गहरे सभ्यतागत संबंधों का उल्लेख किया और द्विपक्षीय रिश्तों को और मजबूत करने की उम्मीद जताई। इसी अवसर पर लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने भी भारत का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने प्रधानमंत्री तारिक रहमान से मुलाकात कर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर से शुभकामनाएं दीं और भारत आने का निमंत्रण सौंपा।

आवश्यकता है

उत्तर प्रदेश राज्य के प्रयागराज जिले से प्रकाशित समाचार पत्र को समस्त जनपदों में एवम तहसील व ब्लॉक/शहर में ब्यूरो प्रमुख, चीफ रिपोर्टर, संवाददाता, प्रतिनिधि मण्डल की अवश्यकता है जिन्हे आकर्षण वेतन और भत्ते आदि सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी।

सम्पर्क सूत्र

शहर समता हिन्दी दैनिक/साप्ताहिक समाचार पत्र

मोबाईल नम्बर 9190052 39332

919450482227

नॉर्वे के प्रधानमंत्री बोले- भारतीय समकक्ष के दौरे का बेसब्री से इंतजार, मजबूत होंगे संबंध

एजेंसी/ नॉर्वे । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी साल के अंत में नॉर्वे की यात्रा कर सकते हैं। नॉर्वे के प्रधानमंत्री जोनास गहर स्टोर ने कहा कि वे इस साल के अंत में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की यात्रा का बेसब्री से इंतजार कर रहा है। इस यात्रा में द्विपक्षीय सहयोग का और विस्तार होगा। ओस्लो में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण से मुलाकात के दौरान स्टोर ने भारत की सुधार संबंधी प्रगति की सराहना की। वहीं, उन्होंने कहा कि नॉर्वे और भारत मत्स्य पालन, स्वास्थ्य प्रौद्योगिकी, समुद्री और अंतरिक्ष क्षेत्रों में सहयोग कर सकते हैं। उन्होंने नॉर्वे में भारतीय प्रवासियों के योगदान की भी प्रशंसा की। वित्त मंत्रालय के एक बयान के अनुसार, उन्होंने ईएफटीए और टीईपीए के संचालन पर भी चर्चा की। दोनों देशों के बीच सहयोग के प्रमुख क्षेत्रों की रूपरेखा तैयार की, जिनमें उच्च–तकनीकी विनिर्माण, कार्बन कैप्चर स्टोरेज, स्टार्टअप, सेमीकंडक्टर, नवीकरणीय ऊर्जा और अपशिष्ट प्रबंधन से संबंधित क्षेत्र शामिल हैं। सीतारमण ने ओस्लो में व्यापार और उद्योग मंत्री सेसिली मैसरेथ और यहां तक कि मत्स्य पालन और महासागर नीति के राज्य सचिव ट्रॉनस्टैड सेजबक्कन से मुलाकात की। नेताओं ने हरित प्रौद्योगिकी, दुर्लभ पृथ्वी प्रसंस्करण, समुद्री और जहाजरानी उद्योग और मत्स्य पालन जैसे क्षेत्रों में गहरा सहयोग स्थापित करने और पारस्परिक अवसरों की खोज करने के तरीकों पर चर्चा की।विशेष रूप से भारत के ईएफटीए और टीईपीए समझौतों के संदर्भ में। मैसरेथ ने बताया कि वह और उनकी टीम इस साल के अंत में होने वाली प्रधानमंत्री मोदी की यात्रा का बेसब्री से इंतजार कर रही हैं। सचिव सेजबक्केन ने नॉर्वे के समुद्री उद्योग में भारत द्वारा निभाई जा रही महत्वपूर्ण भूमिका का भी बात की। वित्त मंत्री ने कहा कि टीईपीए का प्रभावी संचालन दोनों पक्षों के लिए पारस्परिक लाभ को बढ़ावा देगा और वह इसके समय पर संचालन की प्रतीक्षा कर रही हैं। सीतारामण ने ओस्लो में नॉर्वे के प्रमुख सीईओ और निवेशकों के साथ एक गोलमेज बैठक में भी भाग लिया। नॉर्वे के व्यापार और निवेश समुदाय के 35 से अधिक सीईओ और शीर्ष स्तर के प्रतिभागियों के साथ बातचीत की। उन्होंने कहा कि नॉर्वे की उनकी आधिकारिक यात्रा के दौरान भारत को एक निवेश गंतव्य और दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था के रूप में लेकर आकर्षक और सकारात्मक चर्चाएं हुईं। भारत के विस्तारित व्यापार ढांचे – जिसमें ईएफटीए, यूरोपीय संघ, ब्रिटेन और अमेरिका के साथ समझौते शामिल हैं – के आलोक में, केंद्रीय वित्त मंत्री ने भारत में उन परिस्थितियों पर प्रकाश डाला जो व्यापार, औद्योगिक सहयोग और दीर्घकालिक निवेश के लिए एक टिकाऊ ढांचा प्रदान करती हैं। उन्होंने कहा कि केंद्रीय बजट 2026–27 भारत सरकार के उन सुधारों पर भी जोर देता है जिनका उद्देश्य नागरिकों और कंपनियों के लिए नियामक और अनुपालन संबंधी बोझ को कम करना है।

अमेरिकी संसद भवन की तरफ हथियार लेकर दौड़ा 18 वर्ष का किशोर, सुरक्षाबलों ने किया गिरफ्तार

नई दिल्ली, एजेंसी। अमेरिकी संसद भवन (यूएस कैपिटल) की सुरक्षा में उस समय हलचल मच गई जब एक 18 वर्षीय युवक लोडेड शॉटगन के साथ इमारत की ओर बढ़ता हुआ पाया गया। यूनाइटेड स्टेट्स कैपिटल पुलिस (न्ब्ब्) ने सतर्कता दिखाते हुए तुरंत उसे घेरकर गिरफ्तार कर लिया। त्वरित कार्रवाई के चलते घटना में किसी के घायल होने की सूचना नहीं है। पुलिस ने बताया कि आरोपी की पहचान जॉर्जिया के स्मिर्ना निवासी कार्टर कामाचो के रूप में हुई है। वह मंगलवार दोपहर कैपिटल के लोअर वेस्ट टेरेस की दिशा में हथियार लेकर जा रहा था, तभी ड्यूटी पर मौजूद अधिकारियों की नजर उस पर पड़ गई। अधिकारियों ने उसे रोकते हुए हथियार नीचे रखने और जमीन पर लेटने का आदेश दिया, जिसका उसने पालन किया और उसे बिना किसी प्रतिरोध के हिरासत में ले लिया गया। कैपिटल पुलिस प्रमुख माइकल सुलिवन ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि आरोपी कैपिटल की सीढ़ियों के आधार तक पहुंच गया था, इससे पहले कि उसे पकड़ा गया। मुठभेड़ के दौरान अधिकारियों ने एहतियातन अपने हथियार भी निकाल लिए थे। जांच में पता चला कि आरोपी एक सफेद मर्सिडीज–बेंज एसयूवी से मैरीलैंड एवेन्यू साउथवेस्ट के 100 ब्लॉक तक आया था और वहीं से शॉटगन लेकर बाहर निकला। वाहन से केव्लर हेलमेट, गैस मास्क और अतिरिक्त गोला–बारूद भी बरामद हुआ है। पुलिस ने यह भी बताया कि वाहन आरोपी के नाम पर पंजीकृत नहीं था। अधिकारियों के मुताबिक, संदिग्ध टैक्टिकल वेस्ट और टैक्टिकल ग्लव्स पहने हुए था और उसके पास कई राउंड गोलियां भी थीं। उसे गैरकानूनी गतिविधियों, बिना लाइसेंस राइफल रखने, अपंजीकृत हथियार और अपंजीकृत गोला–बारूद रखने जैसे आरोपों में चार्ज किया गया है। फिलहाल कैपिटल पुलिस की थ्रेट असेसमेंट यूनिट उसके मकसद की जांच कर रही है। घटना के बाद इलाके में यातायात अस्थायी रूप से बंद कर दिया गया और लोगों को उस क्षेत्र से दूर रहने की सलाह दी गई। अधिकारियों ने बताया कि नियमित सुरक्षा अभ्यास और एक्टिव थ्रेट ड्रिल्स की वजह से पुलिस की प्रतिक्रिया तेज और प्रभावी रही। वहीं, पुलिस ने स्पष्ट किया कि इस घटना का आगामी स्टेट ऑफ द यूनियन संबोधन की सुरक्षा व्यवस्था पर कोई असर नहीं पड़ेगा।

'भारत–चीन संबंध में गर्माहट, लेकिन प्रतिस्पर्धा जारी', अमेरिकी संसदीय समिति के सामने विशेषज्ञों का खुलासा

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका की एक संसदीय समिति को मंगलवार को शीर्ष अमेरिकी और भारतीय विशेषज्ञों ने बताया कि चीन का बढ़ता सैन्य प्रभाव, आर्थिक प्रभुत्व और तकनीकी ताकत भारत की रणनीतिक चिंताओं को और बढ़ा रहे हैं। उन्होंने चेतावनी दी कि हाल की कूटनीतिक संबंधों में गर्माहट के बावजूद नई दिल्ली और बीजिंग के बीच प्रतिस्पर्धा जारी है। अमेरिका–चीन आर्थिक एवं सुरक्षा समीक्षा आयोग के सामने गवाही देते हुए शिक्षाविदों, थिंक टैंक के विशेषज्ञों और पूर्व अधिकारियों ने कहा कि अक्तूबर 2024 में वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर पीछे हटने की प्रक्रिया से तुरंत तनाव तो कम हुआ, लेकिन भारत और चीन के बीच शक्ति संतुलन में कोई बड़ा बदलाव नहीं आया। समीर लालवानी ने आयोग को बताया कि अनिश्चितता के बावजूद भारत चीन को दुश्मन के रूप में ही देखता रहेगा और क्षेत्रीय, राजनीतिक, आर्थिक और तकनीकी कारणों से चीन के साथ प्रतिस्पर्धा में उलझा रहेगा। उन्होंने कहा कि सीमा पर अब भी सैन्य गतिविधियां जारी हैं और सैन्य संतुलन चीन के पक्ष में है। लालवानी ने कहा कि तिब्बत और विवादित क्षेत्रों में चीन की ओर से संरचना का निर्माण जारी है, भले ही सैनिकों के पीछे हटने की प्रक्रिया हो चुकी हो। उन्होंने चेताया कि दलाई लामा के उत्तराधिकार संकट सहित कोई भी राजनीतिक संकट अनजाने में या जानबूझकर बड़े पैमाने पर पारंपरिक युद्ध में तब्दील हो सकता है। ब्रूकिंग्स इंस्टीट्यूट की तन्वी मदन ने कहा कि यह मौजूदा स्थिति को भारत–चीन संबंधों में रणनीतिक बदलाव नहीं, बल्कि अस्थायी गर्माहट है। उन्होंने कहा, भारत की अपने सबसे बड़े पड़ोसी के साथ संरचनात्मक प्रतिद्वंद्विता बनी हुई है और 2020 के सीमा संकट के बाद चीन पर भरोसा बहुत कम हो गया है। ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन (ओआरएफ) की सौम्या भाविक ने कहा, भारत की सुरक्षा चिंता अब उसकी सीमाओं तक सीमित नहीं है।

अमेरिका-ईरान बातचीत में तनाव, JD वेंस बोले- राष्ट्रपति ट्रंप की शर्तें मानने को तैयार नहीं तेहरान

जिनेवा, एजेंसी। अमेरिका और ईरान के बीच चल रही कूटनीतिक बातचीत को लेकर ताजा बयान सामने आया है। अमेरिका के उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने कहा है कि ईरान अभी तक

राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की तरफ से तय की गई मुख्य शर्तों को मानने के लिए तैयार नहीं है। अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने बताया कि जिनेवा में हुई बातचीत श्कुछ मायनों में ठीक रहीश, क्योंकि दोनों देशों ने आगे भी बैठक जारी रखने पर सहमति जताई है। लेकिन उन्होंने साफ कहा कि ईरान ने अब तक ट्रंप की प्रमुख शर्तों को स्वीकार नहीं किया है। उनके मुताबिक– राष्ट्रपति ट्रंप ने कूटनीतिक समाधान के लिए कुछ स्पष्ट शर्तें रखी हैं। इन शर्तों में सबसे बड़ा मुद्दा ईरान का परमाणु कार्यक्रम है। ईरान अभी इन शर्तों पर खुलकर सहमति देने को तैयार नहीं दिख रहा। जेडी वेंस ने कहा कि अमेरिका अभी भी बातचीत के जरिए समाधान चाहता है। लेकिन उन्होंने चेतावनी भी दी कि अगर बातचीत बेनतीजा रही, तो आगे क्या करना है– इसका फैसला राष्ट्रपति ट्रंप करेंगे। उनका कहना था, श्हम चाहते हैं कि मामला बातचीत से सुलझे, लेकिन अगर कूटनीति की सीमा खत्म हो जाती है, तो अंतिम फैसला राष्ट्रपति का होगा। अमेरिका लंबे समय से ईरान के परमाणु कार्यक्रम को लेकर चिंतित है। ट्रंप प्रशासन चाहता है कि ईरान अपनी परमाणु गतिविधियों पर कड़ी रोक लगाए। वहीं ईरान अपने अधिकारों और सुरक्षा चिंताओं का हवाला देता रहा है। ईरान और अमेरिका के बीच परमाणु कार्यक्रम को लेकर जिनेवा में बातचीत का दूसरा दौर खत्म हो गया है। ईरान की सरकारी मीडिया के मुताबिक, यह बैठक लगभग तीन घंटे तक चली, जिसमें कोई नतीजा नहीं निकला है। मंगलवार को हुई यह मुलाकात परमाणु मुद्दे पर दोनों देशों के बीच दूसरे दौर की बातचीत थी। जिनेवा में वार्ता व अभ्यास ऐसे समय हुए जब अमेरिका ने पश्चिम एशिया में अपनी सैन्य उपस्थिति बढ़ा दी है।

सैन्य तनाव के बीच जिनेवा में अमेरिका-ईरान न्यूक्लियर वार्ता बेनतीजा, अब आगे क्या होगा?

जिनेवा, एजेंसी। ईरान और अमेरिका के बीच परमाणु कार्यक्रम को लेकर जिनेवा में बातचीत का नया दौर खत्म हो गया है। ईरान की सरकारी मीडिया के मुताबिक, यह बैठक लगभग तीन घंटे तक चली। मंगलवार को हुई यह मुलाकात परमाणु मुद्दे पर दोनों देशों के बीच दूसरे दौर की बातचीत थी। जिनेवा में वार्ता व अभ्यास ऐसे समय हुए जब अमेरिका ने पश्चिम एशिया में अपनी सैन्य उपस्थिति बढ़ा दी है। जिनेवा में ईरान–अमेरिका की परोक्ष वार्ता 3 घंटे चली, जिसमें कोई नतीजा नहीं निकला। ईरान ने होर्मुज स्ट्रेट की ओर फायरिंग अभ्यास शुरू कर मिसाइलें दागीं। उसने होर्मुज स्ट्रेट को अस्थायी रूप से बंद कर दिया, जिससे क्षेत्र में तनाव है। दूसरी तरफ, अमेरिका भी इस इलाके में अपनी सैन्य ताकत बढ़ा रहा है। इन हालातों के बीच हुई इस बैठक पर पूरी दुनिया की नजर है। ईरान ने घोषणा की है कि उसके अर्ध सैनिक रिवोल्यूशनरी गार्ड ने फारस व ओमान की खाड़ी स्थित होर्मुज स्ट्रेट में अभ्यास शुरू कर दिया है। ईरान के अंदर और उसके तट व द्वीप के साथ दागी गई मिसाइलों ने होर्मुज जलडमरूमध्य में अपने लक्ष्यों को भेदा। यह जलमार्ग क्षेत्र महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय व्यापार मार्ग है जिससे दुनिया के 20: तेल का परिवहन होता है।

प्रतापगढ़ ब्यूरो
शरद कुमार श्रीवास्तव
7/31, अचलपुर, प्रतापगढ़

संस्थापक
स्व.कन्हैया लाल
स्व.श्रीमती साधना
सम्पादक
उमेश चंद्र श्रीवास्तव
प्रबन्ध सम्पादक
अरविन्द पाण्डेय
संयुक्त सम्पादक
अनंत श्रीवास्तव
संयुक्त सम्पादक (तकनीकी)
केशव श्रीवास्तव
विधि सलाहकार
कल्पना श्रीवास्तव

शहर समता

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा कम्पीटेन्ट बिजनेस सर्विसेज, विष्णु पदम कुटीर 115डी/2ई लूकरगंज, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए,कर्नलगंज इलाहाबाद से प्रकाशित

सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
मो.नं.9005239332

आर.एन.आई.नं.
यूपीएचआईएन/2004/22466

Email : shaharsamta@gmail.com

इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होंगे।